ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

माघ २०७७ फरवरी २०२१

अपना मन बगिया की माटी।
शिक्षा है फूलों की घाटी।।
नव बसंत उत्सव अलबेला।
सरस्वती पूजन का मेला।।
हम सपनों के फूल चुनेंगे।
प्रतिभा के नव पंख खुलेंगे।।

कविता

वासन्ती त्यौहार मनाएँ

– डॉ. रोहिताश्व अस्थाना

वासन्ती त्यौहार मनाएँ।
आओ गाएँ, धूम मचाएँ।।

माघ–शुक्ल पंचमी सुहाई।
धूप गुनगुनी है मुस्काई।
फूली सरसों है पियराई।
गूंजी कोयल की शहनाई।

गेंदा, बैर तथा अमरूदों–
से थाली भर–भरकर लाएँ।।

जन्मदिवस माँ सरस्वती का–
जन्मे इस दिन सुकवि निराला।
आओ सब जन पूजन करके–
पहनाएँ फूलों की माला।

हम बच्चे प्रार्थना कर रहे–
आशीर्वाद हमें मिल जाए।।

हब सबने वासन्ती कुरता–
पीला पाजामा सिलवाया।
बनकर वसन्त, नाचे–कूदे–
गाएँ मिलकर सा रे गा मा।

अम्मा ने गुझिया के संग–संग–
पीले बेसन लड्डू बनवाए।।

आमों में मौर नया आया।
सारे बागों को महकाया।
वासन्ती मौसम है फिरता–
खुशियों के कारण बौराया।

हम सबके जीवन में सौ–सौ।
नव–नव वसन्त आएँ–जाएँ।।

– हरदोई (उ. प्र.)

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

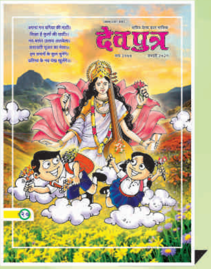

माघ २०७७ ▪ वर्ष ४१
फरवरी २०२१ ▪ अंक ८

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो,

आप एक ऐसी घाटी की कल्पना कीजिए जिसमें दूर–दूर तक फूल ही फूल खिले हैं लाल, नीले, पीले, गुलाबी, नारंगी फूल ही फूल। सारा वातावरण उनकी अलग–अलग सुगंधों से महक रहा हो। हर फूल की अपनी निराली छटा हो, अनूठा आकार और आपको पूरी स्वतंत्रता मिल जाए कि आप इनमें से जो चाहें, जितने चाहें उतने फूल ले लें। उनसे जैसे चाहें वैसा श्रृंगार कर अपने आपको सजा सकें और फिर सज सँवर कर उड़ते हुए जा पहुँचे अपनी ममतामयी माँ के पास और उनके आँचल में उन भरपूर खिले हुए सुगंधित फूल भर दें और माँ प्रसन्न होकर तुम्हें दुलारते हुए कहे 'मेरी बगिया के सच्चे फूल तो तुम हो मेरे बच्चो! जाओ और इन फूलों की सुगन्धें सारे संसार में बिखेर दो।'

बच्चो! यह मात्र एक कल्पना नहीं। कोई परीकथा का अंश भी नहीं। यह एक ऐसा स्वप्न है जो अब साकार होने ही वाला है। वह फूलों की घाटी है **नई शिक्षा नीति**, जिसमें खिले विविध विषयों रूपी फूलों को आप अपनी **संकल्पना शक्ति** और **विचार शक्ति** के पंख लगाकर अपनी **जिज्ञासा** व **सर्जनात्मकता** के अनुसार मनचाहे संयोजन के साथ अपनी अन्दर की प्रतिभा को प्रकट कर सकते हैं।

यह नई शिक्षा नीति विद्यार्थी जीवन के लिए उस वाटिका के समान होगी जिससे बसंत ऋतु कभी विदा न होगी। भारतीय ज्ञान परम्परा की मधुर अमृत गंध से सुरभित शिक्षा की नव सुवास लेकर जब आप भारतमाता को अपने पूर्ण विकसित प्रतिभा–पुष्प अर्पित करेंगे तो माँ भारती तो निश्चय ही आनंदित होगी और आपके प्रतिभा–पुष्प का प्रसाद पाने सारा विश्व भी भारतमाता के चरणों में श्रद्धा करने लगेगा। एक गीत है–

नित्य नए सुमनों से जिसकी रहती गोद भरी।
जननी तेरी सुन्दरता लख आँखें नहीं भरी।।

समय आ गया है कि अब यह गीत सारा विश्व दुहराएगा, आप विद्यार्थियों के नित्य नवीन प्रतिभा–पुष्पों से अर्चित माँ भारती के लिए। बसंत पंचमी की शुभकामनाएँ।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- जिज्ञासा - ललित शौर्य ०५
- भाग गया भूत -डॉ. विमला भण्डारी १४
- अहंकार का अंत - तारा दत्त जोशी २४
- गुरुज्ञान - समीर गांगुली ३०
- अँगुलियों से पढ़ाई - पवित्रा अग्रवाल ३४

आलेख

- दो दो आजीवन कारा... - कुमुद कुमार १२
- सामाजिक समरसता के पोषक : संत रविदास - लालमणि सिंह चौहान २२

लोककथा

- गंगे यमुने - सुधा भार्गव ११

अनुवाद

- बदला - मूलगुजराती:रवीन्द्र अंधारिया - अनुवाद:शिवचरण मंत्री १८

कविता

- वासंती त्यौहार मनाएँ - डॉ. रोहिताश्व अस्थाना ०२
- शिशिर - सतीश बब्बा ०७
- धुन धुन धुन धुन - राजेन्द्र निशेश २१
- मैं चन्द्रशेखर बन जाऊँ - संतोष श्रीवास्तव 'सम' ३३
- नदी नदी - धर्मेश कुमार सिंह ३६
- पेड़ों से - सतीश उपाध्याय ४०
- रात अँधेरा ओढ़े आयी - रामकरन ४१
- मधुमक्खी - भानुप्रताप सिंह ४४
- सौर मण्डल - विजय कुमार पटैय्या ४९
- सर्दी - बलदाऊ राम साहू ५०
- गैस के गुब्बारे - कुसुम अग्रवाल ५१

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला ०६
- विषय एक कल्पना अनेक:
  - करें वंदन - डॉ. एल. आर. सोनी सीकर ०८
  - हे हंस वाहिनी - विष्णु गुप्त 'विजिगीषु' ०८
  - वीणा बजाने वाली - कृपा शंकर शर्मा 'अचूक' ०९
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी १६
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे २६
- आओ ऐसे बनें - मदन गोपाल सिंघल २८
- स्वयं बनें वैज्ञानिक - प्रो. राजीव तांबे - सुरेश कुलकर्णी ३९
- आपकी पाती ४०
- यह देश है वीर जवानों का-१५ केप्टन गुरुबचन सिंह
- छ: अंगुल मुस्कान - मोहनलाल मगो ४४
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग ४५
- पुस्तक परिचय ४८

बाल प्रस्तुति

- जीवदया - वेदिका साहू २८
- बिन्दु - अलिशा सक्सेना ३७

प्रसंग

- विवाह में नहीं पहुँचे... - रमाकांत 'कांत' ३८
- विज्ञान और धर्म - शिवकुमार गोयल ४१

लघुकथा

- अखबारों की आपसी.. - धीरज पोरवाल ३२
- संकल्प - डॉ. योगेन्द्रनाथ शुक्ल ३६

चित्रकथा

- थोड़ी थोड़ी पढ़ाई - देवांशु वत्स १०
- राजा - संकेत गोस्वामी २९
- अनोखी सलाह - देवांशु वत्स ४३

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189 चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - ''**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**'' आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

जिज्ञासा

– ललित शौर्य

ओजस आज सुबह से ही घर पर धमाचौकड़ी मचाये हुए था। किसी को भी कोई काम न करने देता। कभी माँ का हाथ पकड़ लेता तो कभी दादी का चश्मा छुपा लेता। घर वाले आज सुबह से व्यस्त थे। ऐसे में ओजस की ये शैतानी सभी को परेशान किये हुए थी। एक बार तो माँ ने ओजस को कमरे में बंद कर दिया था। लेकिन उसने जोर–जोर से दरवाजे को पीटना शुरू कर दिया, वह चिल्लाने लगा, रोने लगा। थक–हारकर माँ को दरवाजा खोलना ही पड़ा। दरवाजा खुलते ही ओजस रॉकेट की गति से बाहर निकला और पूरे घर का चक्कर लगाने लगा। उसके ऊपर किसी का जोर नहीं चल रहा था।

आज घर पर खूब पकवान बन रहे थे। बूंदी के पीले लड्डू, पीले चावल, माल–पुए और खीर। ओजस का मन खूब ललचा रहा था। वो सोच रहा था कब माँ रसोई से निकले कब वह दो तीन लड्डू मुँह और जेब में भर ले। बहुत देर तक उसकी लड्डू खाने की कोई युक्ति सफल नहीं हुई।

आज ओजस की समझ में ये नहीं आ रहा था कि सुबह–सुबह ये सब किस खुशी में बनाया जा रहा है। आज तो उसका जन्मदिन भी नहीं था। और ना ही दीदी प्रियांशी का। तो ये सब पकवान क्यों। दूर बैठे दादाजी चश्में से नीचे झाँकते हुए ओजस की सारी शैतानियाँ देख रहे थे।

''ओजस! जरा इधर आओ।'' दादाजी ने जोर से आवाज दी। ओजस दादाजी की आवाज सुनकर झट से उठा और दौड़कर उनके पास चला गया।

''आज सुबह से बहुत शैतानी हो रही है, हाँ।'' दादाजी ने ओजस का कान मरोड़ते हुए कहा। ओजस दर्द के मारे उई–उई करने लगा।

''ओ! दादाजी! क्षमा कर दो, क्षमा कर दो......'' ओजस ने दादाजी से हाथ जोड़ते हुए कहा।

''हाँ..... हाँ..... हाँ.....'' दादाजी ने ठहाका मारते हुए ओजस का कान छोड़ दिया। ओजस झट से दादाजी की गोद में बैठ गया।

''दादाजी आज सुबह से घर पर ये पकवान, लड्डू क्यों बनाए जा रहे हैं?'' ओजस ने जिज्ञासा के साथ प्रश्न किया।

''आज बसंत पंचमी है। तुम्हें मालूम नहीं है क्या?'' दादाजी ने पूछा।

ओजस ने ना में सिर हिलाया। वो दादाजी से पूछने लगा– ''दादाजी! ये बसंत पंचमी क्या होती है और हम इसको क्यों मनाते हैं?''

''बेटा बसंत पंचमी बहुत सुंदर त्यौहार है। इसे पूरे देश में मनाया जाता है। इसे श्रीपंचमी भी कहा जाता है। बसंत पंचमी को बसंत ऋतु के आगमन पर उत्सव के रूप में भी मनाया जाता है।'' दादाजी ने ओजस को बताया।

''अच्छा! आज मुझे सुबह ही माँ ने पीले रंग के

कपड़े क्यों पहना दिये, और ये पीले लड्डू, पीले चावल, पीली टोपियाँ सब कुछ पीला ही क्यों पकाया और पहना जा रहा है?'' ओजस ने फिर प्रश्न किया।

''पीला रंग बसंत ऋतु का रंग है। सौभाग्य को दर्शाता है। चारों ओर पीली सरसों फूल रही है। ये उत्साह, हर्ष, उल्लास, शुभ-मंगल का प्रतीक है। इसीलिए इस दिन हम पीले पकवान पकाते हैं। पीले वस्त्र पहनते हैं और हाँ इस दिन सरस्वती माँ की भी पूजा होती है।'' दादाजी ने बताया।

''सरस्वती माँ की पूजा? इस दिन सरस्वती माँ की पूजा क्यों होती है?'' ओजस ने दादाजी से पूछा।

''अरे..... बसंत पंचमी को ही सरस्वती माँ प्रकट हुई थीं। कहा जाता है जब ब्रह्माजी ने पूरी सृष्टि की रचना की तो चारों ओर सन्नाटा था। कहीं कोई आवाज नहीं थी। कोई संगीत नहीं था। उसके बाद ब्रह्माजी ने भगवान विष्णु के कहने पर अपने कमण्डल का जल धरती पर छिड़का तो इससे माँ सरस्वती प्रकट हुई। माँ के प्रकट होने के साथ ही सृष्टि में हलचल हुई। पक्षियों ने कलरव किया। संगीत उत्पन्न हुआ। इसलिए माँ सरस्वती को वागीश्वरी, वाणी की देवी कहकर भी पुकारा जाने लगा। आज ही के दिन बच्चे को पहली बार अक्षर ज्ञान भी कराया जाता है।'' दादाजी ने ओजस को बताया।

अब ओजस बसंत पंचमी का महत्व समझ चुका था। उसने दादाजी से कहा अब वो शैतानी नहीं करेगा। वह भी माँ, दादी और आपके साथ सरस्वती पूजा में बैठेगा। ओजस की इस समझदारी भरी बात सुनकर दादी और माँ ठहाके मारकर हँसने लगी।

– मुवानी (उत्तराखण्ड)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *भरत श्रीराम को अयोध्या लाने का प्रयास करने वन में जाने लगे तो सबसे पहले उनकी भेंट किससे हुई?*
- *चक्रव्यूह में अभिमन्यु ने दुर्योधन के किस पुत्र का वध कर दिया था?*
- *कोणार्क के प्रसिद्ध सूर्य मंदिर जैसा ही एक मंदिर 'करनाक' अफ्रीकी महाद्वीप के एक नगर लक्सर में भी है। यह नगर किस देश में है?*
- *भगवान महावीर की जन्मस्थली वैशाली अपने देश के किस प्रांत में है?*
- *महाकवि कम्ब ने किस भाषा में रामकथा लिखी?*
- *स्वराज्य-स्थापना के प्रयत्न के शुरू में शिवाजी महाराज के मार्गदर्शक कौन थे?*
- *स्नायु-शल्य-चिकित्सा (न्यूरो सर्जरी) का जनक किस प्राचीन भारतीय चिकित्सक को माना जाता है?*
- *महान क्रांतिकारी और शिक्षा से इंजीनियर चम्पक रमण पिल्लई ने जर्मन पनडुब्बी की सहायता से अन्दमान जेल से किन्हें छुड़ाने की योजना बनाई थी?*
- *मालानी (बाड़मेर) के किस राजा को महाराज जनक के समान संत शासक माना जाता है?*
- *किस देश की महारानी हो वांग ओक पर पिछले दिनों भारत में डाक टिकिट जारी किया गया?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

शिशिर

– सतीश 'बब्बा'

किट किट करते दाँत सभी,
शिशिर ऋतु आई कल्लू जी,
हम बूढ़ों को नहीं छोड़ती,
मुँह से शी शी निकले कल्लू जी।

कल्लू कहता सुन लो लल्लू,
बिना शिशिर के काम चले ना,
शिशिर के बाद पतझड़ आएगा,
फिर बसंत मोहक छाएगा।

बच्चे खेल रहे हैं देखो,
क्यों इन्हें नहीं जाड़ा लगता,
बच्चे मन के सच्चे होते हैं,
रक्षक इनके प्रभु होते हैं।

कल्लू कहता सुनो भाई लल्लू,
शी शी करते हैं सभी निठल्लू,
माँ–बापू की बात जो माने,
शिशिर ऋतु से बचाव वो जाने।

उठो सबेरे रगड़ नहाओ,
माँ–बापू के पाँव दबाओ,
गर्म कपड़े पहन गर्म खाना खाओ,
शिशिर ऋतु का डर दूर भगाओ।

– चित्रकूट (उ. प्र.)

करें वंदन

– डॉ. एल. आर. सोनी 'सीकर'

माँ चरणों में शीश है, करें कृपा की कोर।
नेह और आशीष दें, खुशियाँ ओर न छोर।
समझ बालक अपना ही।।
कर में वीणा सोहती, श्वेत वस्त्र श्रृंगार।
श्वेत-हंस वाहन सुखद, नमन करे संसार।
बड़ी महिमा है न्यारी।।
ज्ञान-राशि भंडार है, स्वर संगीत-महान।
कमलासन भी सोहता, जाने सकल जहान।
सभी को ज्ञान सिखातीं।।
'सीकर' कुछ नूतन करे, नूतन सुख हो, हर्ष।
नव-नवीन से नवीनतम, रचना में उत्कर्ष।
करे वंदन अभिनंदन।।

– दतिया (म. प्र.)

हे हंस वाहिनी!

विष्णुगुप्त 'विजिगीषु'

हे हंस वाहिनी! ज्ञान दायिनी! मातु शारदे वर दे!
अमर ज्ञान को देने वाली, सदा तिमिर को हरने वाली।
तेरी चरण शरण में आया, मेरे मन मंदिर में माता।
नव प्रकाश उर भर दे, मातु.....
हम बालक तेरे अज्ञानी, भोले भाले सरल सुबानी।
माता मेरा शुद्ध हृदय है, तेरी ममता से निर्मल है।
अमर ज्ञान का वर दे, मातु.....
लव-कुश जैसे वीर बनें हम, राणा से रणधीर बनें हम।
आरुणि से गुरु भक्त बनें हम, ध्रुव से ईश्वर भक्त बनें हम।
देश भक्ति का वर दे, मातु.....
जग में सुन्दर भाव भरें हम, मानवता का त्रास हरें हम।
लक्ष्मीबाई, दुर्गा, मीरा- सीता, सावित्री घर घर हों,
सत्य, शील का वर दे, मातु.....

– शाहजहाँपुर (उ. प्र.)

वीणा बजाने वाली

– कृपा शंकर शर्मा 'अचूक'

वीणा बजाने वाली, वाणी का दान दे दो।
मन में जला के ज्योति, अधरों पे गान दे दो।।

सेवा के व्रत को ले कर, जन–जन को मैं जगाऊँ।
अभिमत है इस तरह माँ, अमृत का पान दे दो।
मन में जला के ज्योति, अधरों पे गान दे दो।।

सुख दु:ख में माँ सदा ही, बस याद आये तेरी।
समता हो साथ हर पल, ऐसा जहान दे दो।
मन में जला के ज्योति, अधरों पे गान दे दो।।

ममता प्रदायिनी भी, हे! विज्ञान ज्ञान दात्री।
अधिभार बन सकूँ ना, मुझको अमान दे दो।
मन में जला के ज्योति, अधरों पे गान दे दो।।

अद्‌भुत 'अचूक' पथ का, राही है तू सम्भलना।
अविरल, नमन ओ वन्दन, भक्ति व ज्ञान दे दो।
मन में जला के ज्योति, अधरों पे गान दे दो।।

– जयपुर (राजस्थान)

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'माँ सरस्वती' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

आपकी कविता

....
....
....
....
....
....
....

थोड़ी थोड़ी पढ़ाई

चित्रकथा: देवांशु वत्स

गंगे यमुने

– सुधा भार्गव

गंगा–यमुना भारत की दो प्रसिद्ध नदियाँ हैं जिन्हें बच्चा–बच्चा जानता है। ये दोनों जहाँ मिलती हैं वहाँ पर दो मछलियाँ लहरों के साथ खिलवाड़ करती रहती थीं। कभी एक–दूसरे से आगे निकलने की होड़ में तेजी से दौड़ लगातीं तो कभी उछलकर डुबकी लगा गुम हो जातीं। आँख–मिचौनी,दौड़म–दौड़ घंटों चलती रहती पर वे न थकती।

एक का नाम था गंगे और दूसरी का यमुने। जैसे नाम सुंदर वैसे ही वे भी सुंदर। दोनों ही चंद्रमा की चाँदनी में चांदी की तरह गजब सी चमकतीं और सूर्य की किरणों में सोने सी दमकतीं।

एक बार गंगे इतराते हुए बोली– ''मैं तो बहुत सुंदर हूँ।''

''क्या कहा? तू सुंदर! अरे मैं तुझ से भी अधिक सुंदर हूँ।'' यमुने गर्व से लहरा उठी।

''तू सुंदर हाँ–हाँ–काली कलुट्टी बैंगन लुट्टी, शीशे में कभी अपने को देखा है।''

''और तू? तेरा तो कोई रंग ही नहीं है। कभी–कभी खरगोशनी सी जरूर लगती है वह भी सूरज भैया की बदौलत। वे जब हँसते हुए आकाश में दिखाई देते हैं तो तेरे चेहरे पर खुशी की चादर तन जाती है। अब अधिक रौब न झाड़। तेरी ये शेखचिल्ली सी बातें मेरी समझ से तो बाहर हैं। तू चुप बैठ।''

बहत होते होते तू–तू मैं–मैं होने लगी और आपस में प्यार भूल बैठीं।

तभी उनकी दृष्टि एक कछुए पर पड़ी। वे उसकी ओर बढ़ने लगीं।

''कछुए भाई–कछुए भाई! जरा बताओ तो हममें से कौन अधिक सुंदर है?'' गंगे ठुमकते हुए बोली।

''हाँ–हाँ कछुए भाई! हम दोनों को ध्यान से देखकर तनिक बताओ तो कौन अधिक सुंदर है?'' यमुना भी इठलाए बिना न रही।

''सुंदर तो तुम दोनों ही हो पर मैं तुम लोगों से भी अधिक सुंदर हूँ।''

''एँ... तुम सुंदर.. हाँ.... हाँ....। न शक्ल के न सूरत के। मोटा पेट गर्दन छोटी। चाल भी चींटी जैसी।''

''अधिक इतराओ मत। गौर से देखो मेरी पीठ। बरगद के पेड़ की तरह गोलाई लेते हुए बड़ी मजबूत है और गर्दन के क्या कहने। सुराहीदार लंबी शानदार। बगुला भी मेरी गर्दन देख शरमा जाये।''

''ऊँह! जो हम पूछ रहे हैं उसका उत्तर तो दे नहीं रहे हो। बस अपनी तारीख के पुल बांधे जा रहे हो। हमें तुम जैसे लोग पसंद नहीं।''

''तुम भी तो यही कर रही हो– अपनी प्रशंसा स्वयं कर रही हो। मुझसे भी चाहती हो कि तुम्हारी प्रशंसा के बड़े–बड़े पुल बाधूँ। अपनी प्रशंसा अपने आप करने से मन में फूल खिलते हैं पर उनसे गंध नहीं आती। गंध आती भी है तो उस महक को कोई पसंद नहीं करता। ऐसे लोगों से सब दूर भागते हैं।''

गंगे–यमुने को कछुए की बात सोलह आना ठीक लगी और अपनी बहसा–बहसी छोड़कर एक ही छलांग में नदी में समा गईं। उसके बाद किसी ने दोनों झगड़ते नहीं देखा।

– बैंगलुरू (कर्नाटक)

दो-दो आजीवन कारावास

– कुमुद कुमार

''आप मेरे कारागार में अगले ५० वर्ष तक बंदी का जीवन यापन करने जा रहे हैं। तय कर लो कि सबके साथ ठीक से पेश आओगे।'' अण्डमान द्वीप की सेलूलर जेल के बन्दीपाल बारी ने वीर सावरकर को चेताते हुए कहा।

''लेकिन तब तक तुम्हारा साम्राज्य मेरी मातृभूमि से उखड़ चुका होगा, बारी।'' निडर देशभक्त सावकर ने तपाक से उत्तर दिया।

यह करारा झन्नाटेदार उत्तर सुनकर बन्दीपाल बारी कुछ देर तक अवाक् खड़ा रह गया। उसे ऐसे उत्तर की अपेक्षा सपने में भी नहीं थी। आखिर उत्तर देने वाला भी तो कोई मामूली व्यक्ति न था। इस धरती पर वीर सावरकर ऐसे पहले व्यक्ति थे जिन्हें दो आजीवन कारावास और काले पानी का दण्ड एक साथ मिला हो। ऐसी सजा को सुनकर आम आदमी का ता हृदय ही डोल जाये, लेकिन यहाँ तो देशभक्ति की आग में तपे सावरकर थे जो अपनी इस आग से ब्रिटिश साम्राज्य को ही भस्म कर डालना चाहते थे।

महान देशभक्त विनायक दामोदर सावरकर का जन्म २८ मई १८८३ को महाराष्ट्र प्रांत के नाशिक जिले के ग्राम भगूर में हुआ था। बचपन से ही उनके अंदर देशभक्ति कूट-कूटकर भरी हुई थी। सावरकर के बचपन का नाम तात्या था।

२२ जनवरी १९०१ में इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया की मृत्यु पर पूरे देश में शोकसभाएँ हो रही थी। तब सावरकर ने 'मित्र मेला' की बैठक में इन शोक सभाओं का विरोध करते हुए कहा था– ''इंग्लैण्ड की महारानी हमारे शत्रु देश की रानी थी, फिर हम शोक सभाएँ क्यों मनाएँ? हमें दासता के बंधनों में जकड़ने वाली रानी की मृत्यु पर शोक मनाना हमारी दासतापूर्ण मनोवृत्ति का ही परिचायक होगा।''

ऐसी ओजस्वी विचारों से बालकों और युवाओं में आजादी की ललक पैदा करने वाले सावरकर युवाओं के हृदयों की धड़कन बनते जा रहे थे।

सावरकर के ओजस्वी भाषणों से नाराज होकर फर्ग्यूसन कॉलेज, पूना के प्राचार्य ने उन पर उस समय १० रुपये का कड़ा अर्थदण्ड लगाया था। लेकिन सावरकर इन सजाओं से कहाँ विचलित होने वाले थे। २२ अगस्त १९०५ को उन्होंने अपने मित्रों के साथ अंग्रेजी सरकार का विरोध करने के लिये विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। इस बार और बड़ी सजा मिली और उन्हें कॉलेज से ही निष्कासित कर दिया गया।

लेकिन मुबंई विश्वविद्यालय ने उन्हें बी. ए. की परीक्षा देने की अनुमति प्रदान कर दी थी। किन्तु इन घटनाओं के बाद से अंग्रेजी सरकार उन्हें भयंकर व्यक्ति मानने लगी थी।

इसके बाद वकालत की पढ़ाई करने के लिए १९०६ में सावरकर लंदन चले गये। वहाँ 'फ्री इण्डिया सोसायटी' की पहली सभा में उन्होंने भारत की आजादी को लेकर अपने दमदार विचार रखे– ''अंग्रेजी साम्राज्य भारत में सभी समाप्त किया जा सकता है, जबकि भारतीय युवक हाथों में हथियार लेकर मरने-मारने को तैयार हो जायें। सशस्त्र क्रांति से ही भारत की स्वाधीनता संभव है।''

ऐसे विचारों को सुनकर युवाओं का उत्साह आजादी के लिए हिलोरें मारने लगता था। सुप्त पड़ी आत्माएँ भी जाग्रत हो जाती थी। लगता था कि कोई बहादुर वीर अंग्रेजी साम्राज्य की कब्र खोदने के लिए अवतरित हो चुका है।

वे अपने विचारों का प्रसार करने के लिए कई देशों के अखबारों में अपने पत्र भेजते। उन्होंने इटली के महान

नायक मैजिनी की जीवनी लिखी। सिखों का 'स्फूर्तिदायक इतिहास' लिखा। लेकिन उनकी सबसे महान पुस्तकों में थी– '१८५७ का स्वातंत्र्य समर'। इस पुस्तक के विषय में अंग्रेजों की धारणा थी– ''यदि इस पुस्तक को लंदन की टेम्स नदी में बहा दिया जाये तो उसमें भी आग लग जायेगी।''

ऐसे प्रखर विचारों के सावरकर को अंग्रेज सरकार चैन से कैसे रहने देती। १३ मार्च १९१० को भारतीय क्रांतिकारियों को हथियार भेजने के आरोप में उन्हें लंदन में गिरफ्तार कर लिया गया और उन पर राजद्रोह का आरोप लगाया।

कुछ समय कारावास में रखने के बाद १ जुलाई १९१० को इंग्लैण्ड की सरकार ने उन्हें 'मोरिया' नामक जहाज से भारत भेजा। लेकिन सावरकर फ्रांस के मार्सेलीज शहर के पास ८ जुलाई १९१० को जहाज के शौचालय से समुद्र में कूद गये। लेकिन फ्रांस की पुलिस ने उन्हें पकड़कर इंग्लैण्ड की पुलिस को सौंप दिया। किन्तु सावरकर का यह ऐसा साहसिक कारनामा था जिसे सुनकर दुश्मन भी दंग रह गये। इसके बाद भारत में अत्यधिक लोकप्रिय हो गये।

इसके बाद भारत लाकर सावरकर पर दो अभियोग लगाये गये। पहला ब्रिटिश सम्राट के विरुद्ध षड़यंत्र और दूसरा नाशिक के कलेक्टर जैक्सन की हत्या की प्रेरणा देने का अभियोग। असल में १६ वर्षीय किशोर कान्हेरे ने जैक्सन की हत्या की थी। यह माना गया कि जिस पिस्तौल से हत्या हुई थी वह सावरकर ने भेजी थी।

इन दोनों अभि–योगों में सावरकर को २५–२५ वर्ष का आजीवन कारावास का दण्ड सुनाया गया। पहले मुकदमे का निर्णय २४ दिसम्बर १९१० तथा दूसरे का निर्णय ३० जनवरी १९११ को आया था। न्यायाधीश बेसिल स्काट ने निर्णय सुनाते हुए कहा– ''सावरकर जैसे भयंकर अपराधी को दो आजीवन अर्थात् ५० वर्ष तक काले पानी में रखा जाये।''

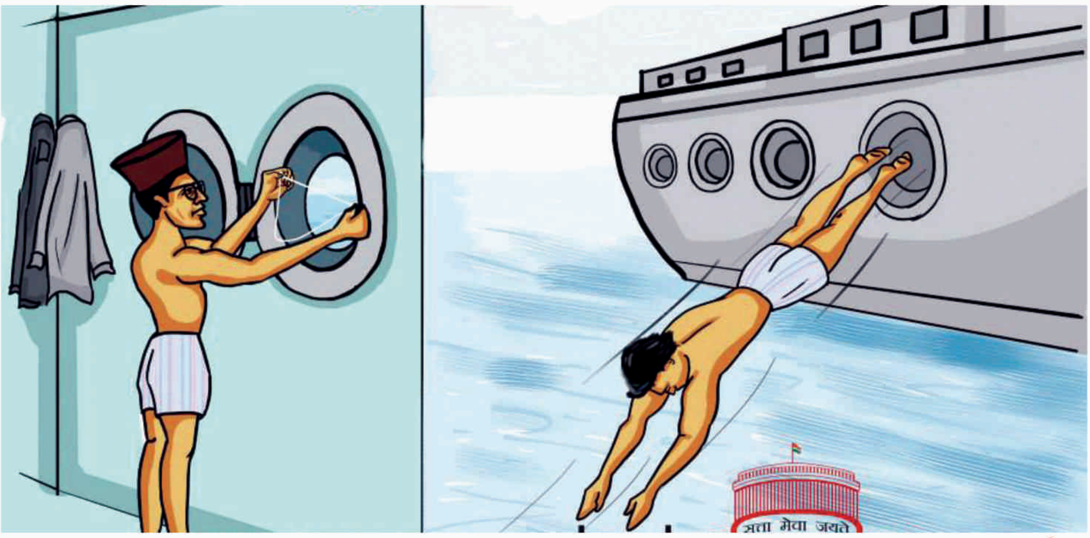

काले पानी की सजा के अन्तर्गत सावरकर को अण्डमान द्वीप की सेलूलर जेल की सातवीं बैरक की कोठरी नं. १२३ में कठोर पहरे में रखा गया। यहाँ उनसे नारियल का रेशा कूटने, कोल्हू जोतने, रस्सी बाँटने, ईंट ढोने, पानी भरने आदि कठोर कार्यों में लगाया गया।

१० फरवरी १९२१ को सेलूलर जेल से उन्हें कोलकाता के अलीराजपुर कारागार भेज दिया गया। वहाँ से उन्हें जनवरी १९२४ में महाराष्ट्र की रत्नागिरि जेल भेज दिया गया। १० मई १९३७ को वीर सावरकर को सशर्त मुक्त कर दिया गया।

वीर सावरकर ने विपुल साहित्य की रचना की है जिसमें कमला, गोमांतक, मोपला, हिन्दुत्व, हिन्दुत्व पदपादशाही, उत्तर क्रिया, मेरा आजीवन कारावास उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

२६ फरवरी १९६६ को मुंबई में सावरकर ने अपनी देह का त्याग किया। संपूर्ण देश इस महान देशभक्त को आज भी नमन करता है।

– बिजनौर (उ. प्र.)

भाग गया भूत

– डॉ. विमला भण्डारी

रमेश और जुगनू दोनों की परीक्षाएँ चल रही हैं। दोनों साथ मिलकर पढ़ते हैं। एक किताब से दोनों बैठकर याद करते हैं। एक पढ़ता है तो दूसरा उसकी व्याख्या करता है। कल परीक्षा का दिन है। जुगनू रमेश के घर पढ़ने आ गया। उनके आपस में इस तरह पढ़ने पर घर वाले प्रसन्न थे। वह एक–दूसरे के घर भोजन भी कर लेते थे और पढ़ते–पढ़ते साथ में बिस्तर पर सो भी जाते थे।

उस दिन भी यही हुआ। दोनों को पढ़ते–पढ़ते रात की ११.३० बज गयी। घर के सब लोग सो चुके थे। रमेश का पढ़ाई का कमरा छत पर बना हुआ है वह लोग उसी में पढ़ाई कर रहे थे। कमरे में टेबल लैंप की रोशनी थी और बाहर घना अंधेरा था।

रमेश ने जुगनू को बताया कि परमाणु की संरचना में न्यूक्लियस, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन, इलेक्ट्रॉन की स्थिति को याद रखना कठिन है। जरा इस पाठ को हम फिर से दोहरा लेते हैं। तभी बाहर थप्प करते कोई आवाज आई।

जुगनू ने कहा कि– ''कुछ सुना तुमने?''

रमेश ने कहा– ''नहीं मुझे तो कुछ भी सुनाई नहीं दिया।''

''अरे कोई आवाज है बाहर देखो तो कौन हैं?'' जुगनू ने कहा।

''बाहर अंधेरा भी बहुत है।''

''तो क्या हो गया, कमरे में तो कमरे में तो उजाला है ना!''

''वह बात नहीं है....।'' रमेश की बात अधूरी रह गई क्योंकि तभी फिर से थपकी की आवाज आई। इस बार की आवाज तो रमेश को भी सुनाई पड़ी।

''कोई न कोई बाहर है अवश्य... चलो चलकर देख लेते हैं।'' रमेश ने कहा जो जुगनू ने मना करते हुए कहा– ''नहीं–नहीं मैं तो अकेला बाहर नहीं जाऊँगा। तुभ भी साथ चलो। घर तुम्हारा है। देखने के लिए तुम ही बाहर जाओगे। मैं भला क्यों.... तुम्हारे साथ?''

''घर मेरा है तो क्या हुआ? पढ़ाई तो तुम भी कर रहे हो ना यहाँ और तुम्हारे कारण ही कमरे का दरवाजा खुला है। कोई भीतर घुस गया...।''

तभी फिर से 'थप्प' की आवाज आई। आवाज सुनकर रमेश जुगनू से चिपट गया। ''मुझे तो लगता है बाहर कोई भूत है।''

''भूत? भूत–वूत कुछ नहीं होता?''

''कैसे नहीं होता? वह राधा सब्जी वाली उस दिन माँ को बात रही थी कि उस पीपल के पेड़ के ऊपर भूत रहता है। भूत दिन भर सोता है और रात को वह लोगों के शिकार के लिए निकलता है। जो एक बार किसी को पकड़ लेता है भूत तो फिर उसे नहीं छोड़ता है।'' रमेश ने उसे फुसफुसाते हुए कहा तो जुगनू हकलाते हुए बोल पड़ा– ''देख.... मुझे डराने का प्रयास मत कर।''

''इतने ही बहादुर हो तो चलो साथ और बाहर देख लो।'' रमेश की धमकी काम कर गई। दोनों ने एक–दूसरे का हाथ पकड़ा और उठ खड़े हुए। तभी फिर से 'थप्प' की आवाज आई। दोनों वापस कुर्सी पर बैठ गये। अब तो जुगनू को भी डर लगने लगा था। ''अवश्य ही कोई बाहर है। क्या पता तुम्हार विचार सही हो। बाहर थोड़ा झाँक कर देख लेते हैं।''

''कोई दिखाई दे रहा है क्या?'' जुगनू ने झाँक कर देखा। अंधेरे में एक सफेद आकृति हिलती हुई दिखाई दी।

''देखो... देखो! रमेश, उधर देखो! वह दिखाई पड़ रहा है भूत...।''

जुगनू ने कहा तो रमेश ने झुककर देखा। वाकई में भूत हिलता हुआ दिखाई दिया। डर के मारे दोनों की घिग्घी बंध गई। दोनों एक–दूसरे के साथ और सटकर चिपक गए।

''अब क्या होगा?..... भूत तो हमें मार ही डालेगा... अब हम जिंदा नहीं बचेंगे...।''

जुगनू ने कहा– ''यदि हम जिंदा नहीं बचेंगे और जब मरना ही है तो हमें बहादुरों की तरह मरना चाहिए।''

''कह तो तुम सही रहे हो। मैं भी कायर की मौत नहीं मरना चाहता।''

''तो चलो, क्यों नहीं भूत से मुकाबला कर लिया जाए।'' जुगनू ने हिम्मत दिखाते हुए आगे कहा– ''मरना तो वैसे ही है और मुकाबले में जीत गए तो भूत को मार डालेंगे और हम जिंदा रह जाएंगे। चलो उठो हिम्मत करो।''

दोनों ने एक–दूसरे को हिम्मत बंधाई। कसकर हाथ पकड़ा और एक कदम आगे बढ़ाया। बाहर दिखाई देने वाली आकृति लगातार हिल रही थी। रमेश ने अपनी आँखें मूँद ली। 'थप–थप' की आवाज अब अधिक तेज होने लगी। दोनों एक–दूसरे से चिपट गये।

''साथ देना मित्र! मुझे छोड़कर भाग मत जाना।'' दोनों ने एक–दूसरे से कहा।

''हम साथ जिएंगे, हम साथ मरेंगे। चलो आगे बढ़ो।''

वह एक कदम, कदम–कदम बढ़ते हुए दरवाजे तक आ गए। जुगनू ने कहा–''चलो ऐसा करते हैं दरवाजा बंद कर देते हैं।''

''दरवाजा बंद करने से क्या होगा? वह सब्जी वाली राधा, माँ को कह रही थी कि भूत तो बंद कमरे में भी आ जाता है।''

''यह तुमने आँखें क्यों बंद कर रखी है रमेश? क्या तुम्हें भूत नहीं दिखाई दे रहा?''

''मुझे डर लग रहा है.....''

''क्या तुम खुद को देख पा रहे हो?''

''नहीं मेरी आँखें खुल नहीं रही है... डर के मारे मेरी आँखें खुल नहीं रही है।''

''देखो, आँखें खोलो। पहचानने का प्रयत्न करो। जिसे तुम सफेद भूत समझ रहे थे वास्तव में यह तुम्हारे दादाजी के कुर्ते पजामे हैं। जो हवा में हल्के–हल्के लहरा रहे हैं। आँखें खोलो यह भूत नहीं है। अब तो 'थप्प–थप्प' की आवाज भी आनी बंद हो गई है। आँखें खोलो।''

वे बात करते हुए बाहर आ गए और छत की लाइट जला दी। लाईट जलाने से उजाला हो गया। उजाला होते ही उनका डर समाप्त हो गया। रमेश ने देखा कि वास्तव में जिसे वह भूत समझ रहा था वह दादाजी के कलफ लगे सफेद कपड़े थे। जो हवा से हल्के–हल्के हिल रहे थे।

''मैं भी कैसा बुद्धू हूँ शाम को मैंने ही तो इस स्थान पर कपड़े हवा में फैलाए थे। माँ ने कहा भी था हटा लेने को पर मैं भूल गया था।'' जुगनू ने हँसते हुए कहा।

''और वह रहा तुम्हारा आवाज करने वाला भूत।'' जुगनू ने इशारा किया।

''क्या मतलब?''

''वह देखो कोने में कौन बैठा है?'' जुगनू के इशारे पर देखकर रमेश चौंक उठा।

''यह बिल्ली महारानी यहाँ क्या कर रही है? इसके पंजों में तो कबूतर दबा हुआ है। बेचारे कबूतर को तो इसने मार डाला है।''

''यह कबूतर का शिकार कर लायी और पंजों में दबा रखा था। तभी कबूतर फड़फड़ा रहा था और 'थप्प–थप्प' की आवाज आ रही थी।''

''और हम भूत समझ के डर रहे थे। अरे देखो तो हमने आपस में हाथ पकड़ा तो... हमसे तभी भूत भागा ना!'' दोनों एक साथ बोले। दोनों ही मित्रों ने एक साथ ताली बजायी, फिर एक–दूसरे के साथ ताली बजाकर हँसने लगे।

– सलूंबर (राजस्थान)

यूं होता है जीवित स्तनपायी प्राणियों का वर्गीकरण

सचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

जानवरों में सबसे सफल दल स्तनपायी जानवरों का है, जो विश्व भर में पाए जाते हैं। स्तनपायी जीव का मतलब है अपने बच्चों को स्तनपान कराने की क्षमता यानी वे अपने बच्चों की भूख अपने शरीर में मौजूद दूध पिलाकर मिटा सकते हैं। इनकी कुल 5000 प्रजातियां पाई जाती हैं। इनका वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है-

मोनोट्रेमेटा-
वे स्तनपायी जीव जो अंडे देते हैं.
उदाहरण-प्लेटीपस

मर्स्यूपिल-
जन्मजात रूप में इनके बच्चे बेहद कमजोर होते हैं और मादा के शरीर से आमतौर पर थैली या जेब जुड़ी होती हैं.
उदाहरण-कंगारू

इन्सेक्टीवोरा-
छोटे कीड़े खाने वाले स्तनपायी जीव.
उदाहरण-मोल

डेर्मोप्टेरा-
उड़ान भरने वाले स्तनपायी जीव.
उदाहरण-फ्लाइंग लेमूर

कीरोप्टेरा-
पंखों वाले स्तनपायी जीव.
उदाहरण-चमगादड़

प्रीमेट्स-
ऐसे स्तनपायी जीव जिनका नाड़ी तंत्र विशेष रूप से विकसित है.औरों से अलग, अंगूठे वाले.
उदाहरण-बंदर

इडेन्टाटा-
कुछ ऐसे स्तनपायी जीव जो आमतौर पर खूंटे जैसे दांतों वाले हैं.
उदाहरण-एंटईटर यानी चींटीखोर

लेगोमोरफा-
छोटे और सामान्य मध्यम आकार वाले स्तनपायी जीव जिनके पंजेनुमा खुर हों और अंशिक रूप से छोटी पूंछ हो.
उदाहरण-खरगोश

फोलीडोटा-
एक के ऊपर एक ढ़के हुए शल्क या कवच वाले स्तनपायी जीव.
उदाहरण-पेंगोलिन

रोडेन्टीया-
लगातार कुतरने वाले स्तनपायी जीव.
उदाहरण-चूहा

केटासिया-
मछली जैसी खासियत वाले पानी में तैरने और डुबकी लगाने वाले स्तनपायी जीव.
उदाहरण-ह्वेल

कॉरनीवोरा-
मांसाहारी या गोश्त खाने वाले स्तनपायी जीव.
उदाहरण-कुत्ता

प्रोबोसीडिया-
बड़े आकार और सूंड वाले स्तनपायी जीव.उदाहरण-हाथी

हाय्राकोइडिया-
छोटे कुतरने वाले स्तनपायी जीवों जैसे जीव.उदाहरण-हायरेक्स

सीरेनिया-
पानी में विचरण करने वाले,चप्पू जैसे अंग,पैडलजैसी पूंछ और पिछले पैर बिना वाले स्तनपायी जीव. उदाहरण-मेनाटी

पेरीस्सोडाक्त्यला-
पिछले पैरों में विषम संख्या में खुर वाले स्तनपायी जीव.उदाहरण-घोड़ा

आर्टीओडाक्त्यला-
सभी पैरों में सम संख्या में खुर वाले स्तनपायी जीव.उदाहरण-गाय

समाप्त

बदला

– मूल गुजराती– रवीन्द्र अंधारिया (भावनगर)
– हिन्दी अनुवाद– शिवचरण मंत्री

यह कहानी कोई काल्पनिक, नहीं अपितु मेरे परममित्र झींगाना की कही वार्ता है। वह अफ्रीका के अंगोला का निवासी है। वह वहाँ का मूल निवासी है, वह बहुत ही अच्छा शिकारी है, पर निर्दोष प्राणियों का शिकार कभी नहीं करता है परन्तु जब कोई प्राणी मानवभक्षी बन जाता है और उसे इसका पता लगता है तो उसे खत्म करने में वह नहीं हिचकिचाता है। यह बात उसके बचपन की अर्थात उसी आयु दस–ग्यारह वर्ष की थी तब की है। उस समय वह गोरे शिकारियों के लिए मार्गदर्शक का व्यवसाय करता था। तो सुनें, उसी की कही यह कथा।

यह घटना सन् १९७० की है। जांबाज शिकारी डेसमण्ड डे जी की टीम का मैं मार्गदर्शक का कामकर रहा था। उस समय अफ्रीका में १३ लाख से अधिक हाथी थे। इसके शिकार करने को शिकारियों के टोले के टोले आते रहते थे। मैं यह भलीभाँति जानता था कि हाथियों के शिकार करने को तालाब के किनारे पड़ाव डालना चाहिए। हाथी का शरीर मोटा और शक्तिशाली होता है इसलिये उन्हें प्यास अधिक लगती है। हाथी को दिनभर में १५० से १८० लीटर पानी की आवश्यकता होती है। इसीलिये मैं डेसमण्ड डे को तालाब या नदी के किनारे ले जाता तो मेहनत कहाँ दिखाई देती? अत: मैं उसे जंगल में इधर–उधर घुमाता रहता। इसी कारण रास्ते में कई छोटे–बड़े प्राणियों से सामना होता रहता था। इनमें जेब्रा, हिरण, रीछ आदि जंगली प्राणी भाग–दौड़ करते दिखाई देते। तदुपरांत डेसमण्ड डे इनका शिकार नहीं करता। वह तो बस हाथी का ही शिकार करता था।

मुझे इसका कोई उचित ठोस कारण समझ में नहीं आता था। मैं तो पैसे के लोभ में उसे हाथियों के समूह तक पहुँचा देता था और वह वहाँ मदमस्त हाथियों को मार डालता था। इसके बाद वह मृत हाथियों का क्या करता है यह जानने की उसकी इच्छा ही नहीं होती इस प्रकार जंगल का प्राणी जंगल में ही मिल जाता। मुझे इसमें बड़ा मजा आता था। दो–चार दिन केम्प पूरा होते ही ये लोग मुझे ढ़ेर सा पैसा देकर लौट जाते थे। दो–चार महीने में ये लोग पुन: आते और मुझे मार्गदर्शक बनाकर ले जाते।

एक बार हमने चेनल नदी के किनारे पड़ाव डाला था। हम शिकार की खोज में इधर–उधर घूम रहे थे। हमने देखा कि थोड़ी दूर नदी के किनारे हाथियों का एक टोला खेल कर रहा था। डेसमण्ड डे को मानो यह बहुत ही अच्छा अवसर मिला। उन्होंने ज्यों ही निशाना साथा मैंने टोकते हुए कहा– ''नहीं इस समय नहीं।''

''नो, बट व्हाय?'' डे ने कुछ नाराजगी व्यक्त करते हुए कहा।

''इस समय वे प्राणी बड़ी मस्ती में है। देखिए सूंड से सूंड मिलाकर शरीर परस्पर रगड़ रहे हैं। उनकी यह विशेष ऋतु है। ऐसे समय में हम इनका शिकार नहीं करते

हैं। इस देश में इस दशा में हाथी का शिकार करना अपराध है।'' मैंने उसे समझाने का बहुत प्रयत्न किया। पर डेसमण्ड पर तो शिकार का भूत सवार था। उसने स्पष्ट कहा कि काले लोगों का कानून गोरे लोग नहीं मान सकते हैं और उसने गोली छोड़ दी। गोली कनपटी में लगी और हथिनी निढाल होकर गिर पड़ी। रंग में भंग पड़ा। हाथी को बहुत गुस्सा आया और वह भयंकर चिंघाड़ के साथ डेसमण्ड की ओर बढ़ने लगा।

अन्य हाथियों में भगदड़ मच गई। डेसमण्ड ने सामने से आ रहे हाथी पर गोली दागी पर उसका निशाना बेकार गया। वैसे वह एक कुशल निशानेबाज था। पर गोली हाथी के शरीर को छूती हुई निकल गई। अब हाथी एकदम पास में ही आ गया था। मृत्यु को साक्षात सामने ही खड़ी देख डेसमण्ड और उसके साथी दुम दबाकर भागे। हाथी पागल सा होकर उसके पीछे पड़ा था, पर शिकार हाथ न आते देख क्रोधित हाथी ने तम्बू और अन्य सब सामान व बंदूकों पर अपना गुस्सा उतारा और फिर धब्ब–धब्ब करता मृत पड़ी हथिनी के पास जाकर उस पर सूंड फेरता हुआ रोने लगा।

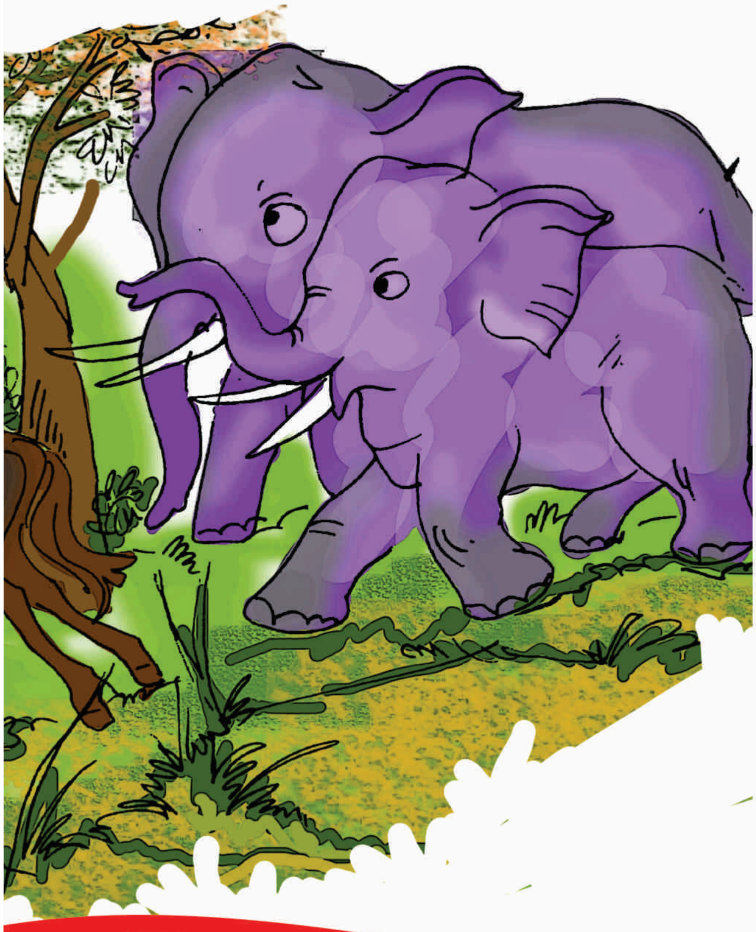

समय बड़ी तेज गति से बीतने लगा। डेसमण्ड आता रहा, शिकार करता रहा, परन्तु सतत दो साल से अकाल पड़ते रहने के कारण हाथियों का झुण्ड पानी की तलाश में दूर–दूर तक भटकने लगा और हाथियों का झुण्ड सैकड़ों किलोमीटर दूर साईबेरिया के उत्तर प्रदेश में चला गया। डेसमण्ड डे भी अब नहीं आता था।

समय बीता। समय के साथ ऋतु चक्र भी बदला। आकाश में घने काले बादल मंडराने लगे। गर्जन, बिजली के चमक के साथ मूसलाधार वर्षा होने लगी। अंगोला के नदी–नाले बहने लगे, तालाब छलकने लगे। अंगोला से बिदा हुए हाथियों के समूह पुन: आने लगे। उनको भी पता लग गया कि जन्मभूमि में बरसात हो गई है। मित्र! तुझे पता न हो तो बता दूँ कि हाथी की सुनने व सूंघने की शक्ति बहुत ही अधिक होती है। वह इन्फ्रा साउण्ड को परख कर पहचान सकता है। मानव के कान तो अल्ट्रा साउण्ड को ही पहचान सकते हैं, इतना ही नहीं हाथी की स्मरण शक्ति भी बहुत ही अनोखी होती है। अन्य प्राणियों में हाथी की सी स्मरण शक्ति नहीं होती। अत: वातावरण में ज्यों ही ठंडक आई कि सैकेड़ों किलोमीटर दूर भटकते हाथियों को ज्ञात हो गया कि आकाश में बिजलियों की चमक और बादलों की गड़गड़ाहट शुरू हो गई और वर्षा भी होने लगी है और इसी कारण अंगोला के जंगलों में हाथियों की चिंघाड़ें गूंजने लगीं।

डेसमण्ड भी आ पहुँचा। मैंने देखा कि उसके रेशम से ब्राऊन बाल गायब है और उनकी जगह सूखे और खिचड़ी बाल हो गए हैं। मुँह की झुर्रियाँ उसकी ढलती उम्र की साक्षी दे रही थी, पर उत्साह यथावत था। मुझसे कहा– ''झींगानो! मुझे लग रहा है कि मौसम बहुत सुहाना है। नदी इस समय पूरे वेग से बह रही है, अत: शिकार के लिए बहुत दूर भटकने की बजाय तू हमें अपने पुराने स्थान पर ही पहुँचा दे।''

''ओके सर!'' अब तो मुझे भी अंग्रेजी बोलना आ

गया था। मैं भी कॉलेज में ही पढ़ रहा था। ''देट्स गो टू रीवर।'' ''यस सर।'' इस तरह हमने नदी के किनारे हमारे मूल स्थान पर अपना पड़ाव डाला। इस समय धरती माँ ने हरी चूनरी ओढ़ ली थी। वृक्ष घटादार हो गए थे। पक्षियों के मन मोहक कलरव मन मोह रहे थे। और इससे वातावरण अच्छा बन गया था। नदी का मीठा, निर्मल जल पीने को हिरण, जेब्रा, जिराफ व अन्य प्राणी आते थे, परन्तु डेसमण्ड डे को तो मात्र हाथियों के ही शिकार की प्रतीक्षा थी। अलबत्ता, मुझे भी यह बात समझ में आ गई थी कि डेसमण्ड मात्र हाथियों का ही क्यों शिकार करता है? क्योंकि जीवित हाथी जहाँ लाख का होता है वही मृत सवा लाख का।

इस बार डे को अधिक समय तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। दूसरे ही दिन हाथियों का एक झुण्ड झूमता–झूमता नदी के किनारे की ओर आता दिखाई दिया। डे यह देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ। उसने सोचा कि विगत कई सालों से उसके शिकार नहीं करने का घाटा इस वर्ष पूरा हो जायेगा।

मैंने देखा कि झूमते–झूमते मदमस्त हाथियों में से एक हाथी ने अपनी दिशा बदली और वह टोले में से अलग हुआ और घने जंगल में घूमने लगा, अदृश्य हो गया। दूसरी ओर डे की नजर तो समीप आ रहे हाथियों पर थी। हाथी नदी के किनारे पर आकर सूंड ऊँची कर चिंघाड़ते हुए नदी में नहाने लगे। सूंड में पानी भरकर एक–दूसरे पर डालने लगे, फुहारें चलने लगे। ऐसा आनंदमय वातावरण देख कर डेसमण्ड भी क्षणिक शिकार करना ही भूल गया।

इसी समय उसके साथियों ने उसे शिकार करने का उत्तम अवसर निकल जाने की बात कही। वह तुरन्त जागा। उसने निशाना साधने को बंदूक उठाई। उसने आज चार–पाँच हाथियों को एक साथ मारने की पोजिशन ली। बंदूक को कंधे पर रखकर ज्योंही निशाना साधा कि यह क्या हो गया?

मानो धरती में से हाथी फूट पड़ा। डेसमण्ड कुछ सोचता–विचारता कि इससे पहले ही हाथी ने डेसमण्ड डे को अपनी सूंड में दबाकर गेंद की तरह आकाश में उछाला कि इसी समय उसके प्राण निकल गए। हम सब हाथी के इस भयानक हमले से डरकर दूर भागे। पर मेरी नजर हाथी के शरीर पर गोली के लगने के निशान पर पड़ी। ओह! यह तो वही हाथी था जिसकी हथिनी को डेसमण्ड डे ने मारा था। मेरे मुँह से निकला वाह! बदला हो तो ऐसा। यह कहानी सुनकर मेरे मुँह से निकल पड़ा 'सेर को सवा सेर, नहले पर दहला।'

– अजमेर (राजस्थान)

उलझ गए! 23

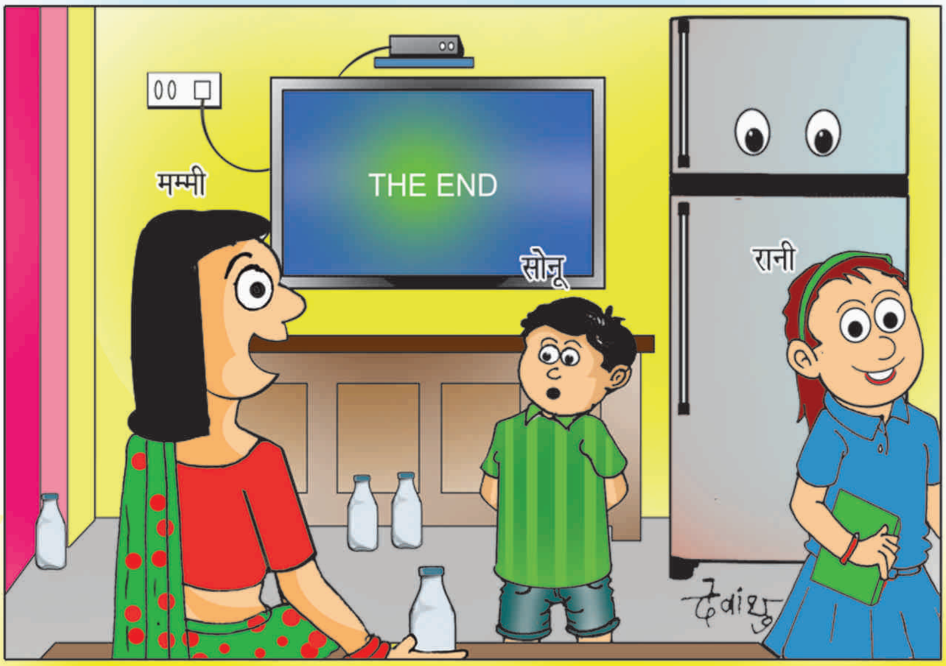

माँ ने सोनू से रानी के बारे में बताया-'यह तुम्हारी बुआ के भाई की सास की बेटी की भतीजी है।' सोनू और रानी का आपस में क्या रिश्ता होगा?

उत्तर: रानी सोनू की ममेरी बहन है।

धुन-धुन-धुन-धुन

- राजेन्द्र निशेश

पैंजा कहता
तुन-तुन-तुन-तुन,
रूई कहती
धुन-धुन-धुन-धुन।

सरदी रानी
रौब जमाती,
नई रजाई
बुन-बुन-बुन-बुन।

माँ कहती है
करो पढ़ाई,
बात बड़ों की
सुन-सुन-सुन-सुन।

टहनी पर फल
लटक रहे हैं,
सुन्दर मीठे
चुन-चुन-चुन-चुन।

एक सेब तुम
नित नित खाओ,
इसके परखो
गुण-गुण-गुण-गुण।

कोयल मीठा
गान सुनाती,
मीठी वाणी
गुन-गुन-गुन-गुन।

- चण्डीगढ़ (हरियाणा)

सामाजिक समरसता के पोषक संत रविदास

– लालमणि सिंह चौहान

संत रविदास का जन्म अनुमानत: सन् १३८८ ई. में वाराणसी उ. प्र. में हुआ था। मध्यकालीन संतों में रविदासजी का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका ज्ञान, साधना और अनुभव पर आधारित है। उन्होंने भक्ति के लिए वैराग्य को अनिवार्य माना है।

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी
जाकी अंग अंग बास समानी।।

यह उनका ही बहुत प्रसिद्ध भजन है। उनका विचार है कि मानव जीवन का ध्येय ही सब को सुख और शांति पहुँचाना है।

सबका कल्याण करना है, जाति का भेद मिटाना है आपसी प्रेम भाव बढ़ाना है तो इस कार्य को संत रविदास के बताए मार्ग पर चलकर प्राप्त किया जा सकता है।

संत रविदास ने समाज को अपने दर्शन के माध्यम से जो नई दिशा दी है, नई सोच दी है, नये विचार दिये हैं वह आज समाज के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है। यदि समाज में इन विचारों को मान्यता मिलती है तो व्यक्ति का कार्यों के प्रति झुकाव बढ़ेगा और आपस में प्रेम भाव तथा सद्भावना बढ़ेगी तो समाज और देश दोनों की प्रगति होगी।

संत रविदास जी का कहना है कि जन्म के कारण किसी को महान नहीं कहा जा सकता। किसी व्यक्ति को किसी जाति विशेष में पैदा होने के कारण हम आदर्श, उत्कृष्ट या महान नहीं कह सकते। व्यक्ति की महानता उसके कार्यों से पहचानी जाती है।

यह आदिकाल से चला आ रहा है कि जो जिस तरह के कार्य करते थे उसके आधार पर उसकी पहचान बनती थी। जो ज्ञान का कर्म करता था चाहे वह शूद्र के यहाँ ही क्यों न पैदा हुआ हो वह ब्राह्मण कहलाता था और जो ब्राह्मण के यहाँ पैदा होता था लेकिन उसके कार्य घृणित होते थे उसको शूद्र कहा जाता था इस तरह स्पष्ट है कि अनादिकाल से ही कर्म को महत्व दिया गया है।

कार्य ने ही आदमी की पहचान बनाई है कर्म से ही व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास होता है जो जितने ऊँचे कर्म समाज के लिए देश के लिए अनुकरणीय होंगे, सबको उत्कृष्ट बनाने तथा सबके सुख की बात जिसके मन में होगी, सबके प्रति प्रेम होगा, जाति धर्म के आधार पर किसी के प्रति कोई कटुता या द्वेष नहीं होगा ऐसे व्यक्ति ही समाज के लिए अनुकरणीय, आदर्श और सम्माननीय होंगे।

जिसके कार्य, उसके स्वयं की सुख सुविधा, शरीर के पोषण, भौतिक सुखों की प्राप्ति, धन सम्पदा की प्राप्ति, पद की प्राप्ति, ख्याति की प्राप्ति के स्वयं तक सीमित होकर अपने और अपने परिवार के लाभ के लिए होंगे ऐसा व्यक्ति कभी भी न तो महान बन सकता है न ही उसे महान कहा जा सकता है।

संत रविदास ने यह बताने का प्रयास किया है कि जीवन में व्यक्ति का जन्म किसी जाति में हुआ है यह महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि महत्वपूर्ण तो यह है कि उसकी संगति कैसी थी, उसके जीवन में किस प्रकार के कृत्य किये हैं जीवन यापन के लिए यदि उसको छोटे काम भी करने पड़ें जोकि समाज की उपेक्षित श्रेणी के कार्यों में आते थे इसके बाद भी उसने ईश्वर भक्ति का आसरा लिया, कर्मकाण्ड, पूजा पाठ से दूर रहते हुए भी हृदय में ईश्वर को बसाया, ईश्वरीय प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया वहाँ ईश्वर की संगति में है इसका अनुभव समाज को कराया।

संत रविदास जी ने कहा कि व्यक्ति को संचालित करने वाले तीन साधन हैं– ज्ञान, विचार और चित्त। ज्ञान मनुष्य को अंधकार से दूर करता है और विवेकशील बनाता है। विवेकशील व्यक्ति ही अपने जीवन के लक्ष्य को समझ सकता है। ज्ञान की बातें व्यक्ति के हृदय में तभी आती है जबकि वह ईश्वरीय सत्ता को स्वीकार करता है।

यदि व्यक्ति विवेकशील है तो उसके विचार में हमेशा यह ध्यान रहेगा कि यह जीवन चिर स्थाई नहीं है केवल कुछ दिनों के लिए है, इसलिए इस जीवन में आप ऐसा कोई कार्य कर जाइए कि आपके शरीर के नहीं रहने पर भी आपकी उपस्थिति का आभास समाज व्यक्ति और देश को होता रहे। चित्त या मन ही व्यक्ति को भटकाने का सबसे बड़ा माध्यम होता है।

भौतिक आकर्षण को ही जीवन की सार्थकता मान लेता है और हमेशा इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति में लगा रहता है। यह चित्त जब तक मनुष्य को भटकाता है जब तक मनुष्य भगवान से अपने को नहीं जोड़ लेता।

इस प्रकार संत रविदास का बताया हुआ मार्ग ही हमारे जीवन के उत्कर्ष तथा उसको उत्कृष्ट बनाने का सच्चा मार्ग है इसी मार्ग पर सबको चलकर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की आवश्यकता है और इस लक्ष्य को प्राप्त करना जिससे की व्यक्ति का, देश का, समाज का कल्याण हो, प्रत्येक व्यक्ति के जीवन का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। जो व्यक्ति इस दिशा में लगातार कार्य कर रहा है वही सच्चा मानव कहलाने का पात्र है। समाज उसी को सम्मान, मान और स्नेह देगा।

– सीधी (म. प्र.)

आओ, आओ खेलें खेल

– चाँद मोहम्मद घोरी

नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी– (राजस्थान)

अहंकार का अंत

– तारा दत्त जोशी

एक दिन ज्योमैट्री बॉक्स में बैठे–बैठे 'पेंसिल', 'रबर', और 'कटर' में आपस में झगड़ा हो गया। तीनों अपने को बड़ा बता रहे थे। पेंसिल का कहना था कि रबर और कटर उससे छोटे हैं। जबकि वे दोनों उसे बड़ा मानने को तैयार नहीं थे। पेंसिल कह रही थी, वे दोनों बॉक्स से हट जाएं। रबर रो रहा था और कटर अवसर की प्रतीक्षा में था कि कब पेंसिल को खुरच–खुरच कर उसका घमंड दूर कर दे। तीनों के झगड़े से बॉक्स का वातावरण तनावपूर्ण हो गया था।

कुछ दिन तक तीनों किसी प्रकार बॉक्स के अंदर रहे। किन्तु एक दिन रबर ने सोचा–''आखिर कब तक हम इस तरह तनाव में घुट–घुटकर रहेंगे। क्यों न पंचायत में निर्णय कर लिया जाए? पंचायत जिसे बड़ा मानेगी, वह सब की स्वीकार होगा।'' यह बात पेंसिल और कटर को भी अच्छी लगी।

तीनों पंचायत के लिए पटरी (स्केल) के पास जाकर बोले– ''दीदी! आपका काम सबको नापना है। आप हमारा निर्णय कर दीजिए।''

पटरी ने पूछा– ''क्यों क्या हुआ? क्या आप तीनों मुझे सरपंच के रूप में स्वीकार करते हैं?''

तीनों ने 'हाँ' में अपना सिर हिलाया।

झगड़े का कारण पूछने पर पेंसिल बोली– ''पटरी दीदी! मैं रबर और कटर दोनों से बड़ी हूँ और इन दोनों से अधिक काम करती हूँ। मैं अपनी अंतिम सांस तक घिस–घिसकर ज्ञान का संचार करती हूँ। इसीलिए मेरा स्थान इन दोनों से ही बड़ा है। किन्तु यह रबर और कटर मुझे कुछ नहीं समझते हैं।''

''अच्छा...! रबर तुम्हारा क्या कहना है?''

रबर बोला– ''दीदी! यह पेंसिल खाली घमंड में आई है। मैं भी इसके साथ बराबर काम करता हूँ और अपने शरीर को घिस–घिसकर इसकी गलतियाँ सुधारता हूँ। अगर मैं इसकी गलतियाँ नहीं सुधारता तो इसे कोई नहीं पूछता। मेरा कद छोटा अवश्य है, किन्तु भूल सुधारक के रूप में मेरा काम इससे कई गुना अधिक महत्वपूर्ण है। फिर यह पेंसिल मुझसे बड़ी कैसे हुई?''

अब कटर की बारी थी। कटर कहने लगा– ''ये दोनों ही गलत–फहमी में हैं। दीदी! आप ही सोचो, अगर मैं पेंसिल को छीलकर लिखने योग्य न बनाऊँ तो यह कैसे लिखेगी? और अगर पेंसिल लिखेगी ही नहीं तो रबर कैसे इसकी भूल सुधारेगा?''

तीनों के तर्क सुनने के बाद पटरी बोली– '' आप तीनों ही अपनी जगह सही हैं। किन्तु अहंकार से आप तीनों एक–दूसरे के महत्व को नहीं समझ पा रहे हैं। वास्तव में आप में न कोई छोटा है और न बड़ा।''

पेंसिल को आशा थी कि पटरी उसे अवश्य बड़ा बताएगी। किन्तु पटरी की बातों से निराश होकर बोली– ''दीदी! हम बड़ी आशा से आपके पास आये थे, किन्तु आप तीनों को समान बताकर किसी को निराश नहीं करना चाहती हो। इसीलिए....।''

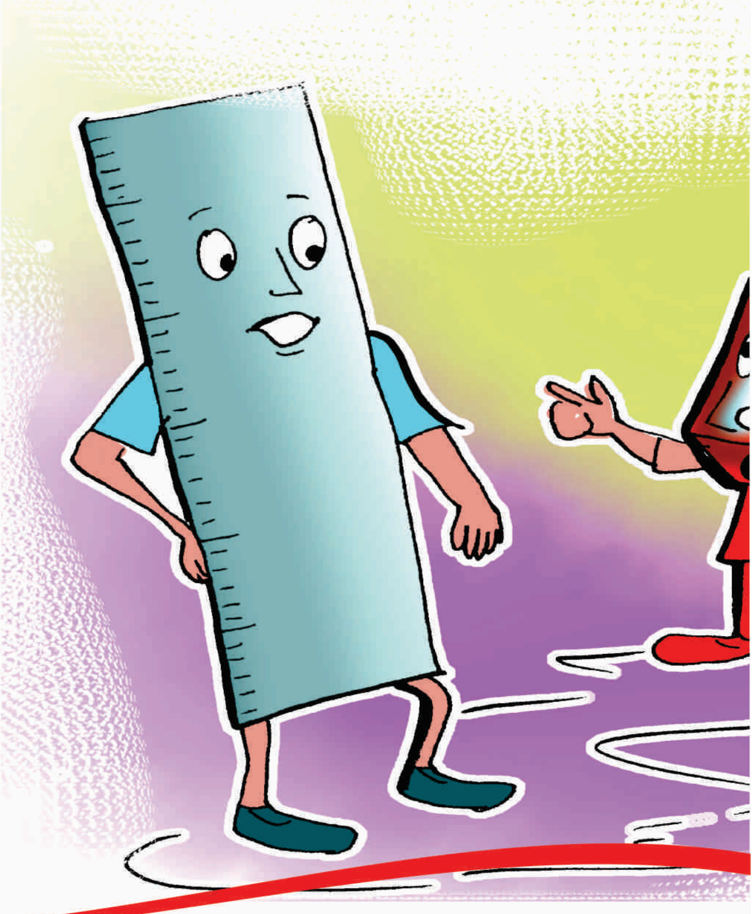

पटरी बोली– ''नहीं ऐसी बात नहीं है। अच्छा एक बात बताओ, कटर तुम्हें काम करने योग्य बनाता है और रबर तुम्हारी गलतियों को मिटाता है, न?''

''हाँ।''

''जो हमें काम करने योग्य बनाए और जो हमारी गलतियों को मिटाकर केवल हमारी अच्छाइयों को समाज के सामने लाए तो, वह हमारा सबसे अच्छा मित्र हुआ या नहीं?'' पटरी ने तर्क दिया।

पेंसिल ने कुछ देर सोचकर सहमति में सिर हिलाया। रबर और कटर ध्यान से पटरी की बात सुन रहे थे।

पटरी फिर कहने लगी– ''रबर, अगर पेंसिल कोई गलती न करे तो फिर तुम्हारी आवश्यकता ही न होगी। हाँ कटर! अगर पेंसिल काम ही न करे तो फिर तुम्हें भी खाली रहना होगा, क्यों?''

दोनों ने हाँ में सिर हिलाया।

''तब तो आप तीनों मित्र और एक–दूसरे के पूरक हुए। फिर यह झगड़ा कैसा?''

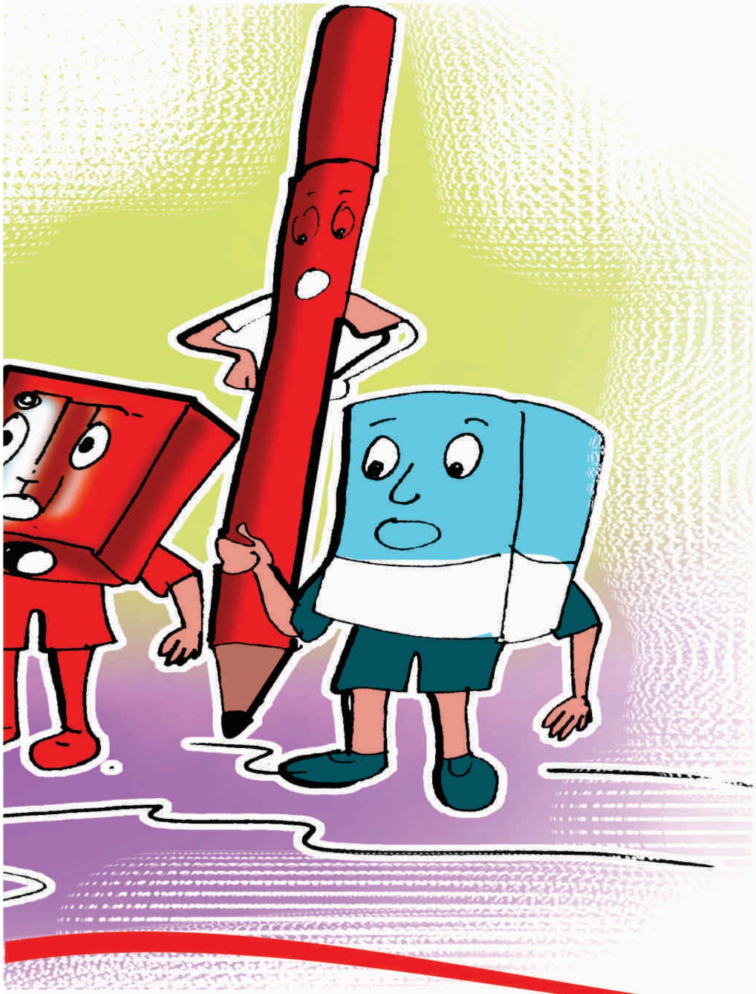

कोई कुछ बोलता, इससे पहले ही पेंसिल सिसकियाँ भरकर रोते हुए बोली– ''मुझे क्षमा कर दो दीदी! मुझसे गलती हुई है। मैंने अज्ञानता से ऐसा किया है।''

पटरी ने पेंसिल को पास बुलाया और गले लगाकर बोली– ''नहीं बहन! रोते नहीं हैं।'' ''वास्तव में हम सब एक–दूसरे के पूरक हैं। कोई भी बड़ा या छोटा नहीं है। एक–दूसरे के सहयोग के बिना हमारा काम नहीं चल सकता है। अत: हमें आपसी फूट से बचकर मिलजुलकर एक–दूसरे का सहयोग करते हुए प्रेम से रहना चाहिए।''

अब रबर व कटर को भी अपनी भूल अनुभव होने लगी। वे दोनों भी पटरी के पास गए और क्षमा माँगने लगे। पटरी ने तीनों को गले लगा लिया। तीनों एक साथ बोले ''दीदी! आपने हमारा अहंकार दूर कर दिया है। अब हम कभी नहीं लड़ेंगे और मिलजुलकर प्रेम से अपना काम करेंगे।''

पटरी ने तीनों को शाबाशी दी और बोली, ''अब बताओ सबसे बड़ा कौन?''

पेंसिल बोली– ''दीदी! सबसे बड़ी तो दोस्ती और प्रेम है जो हम सबको एक सूत्र में पिरोए रखते हैं।'' पेंसिल की बात सुनकर रबर और कटर भी प्रसन्न हो गये और जाने हेतु पटरी से विदा मांगने लगे।

पटरी बोली– ''भाई! आप लोग मेरे घर आए हो जरा मुँह तो मीठा करो।'' फिर अंदर जाकर पटरी ने तीन मिश्री लाकर तीनों को दी।

रबर बोला– ''यह क्या दीदी! आप भी तो खाओ।''

तीनों ने अपनी मिश्री में से तोड़कर पटरी को भी मिश्री दी। पटरी ने शाबाशी देकर तीनों को विदा किया।

तीनों एक–दूसरे का हाथ पकड़कर हँसते हुए वापस आ गए।

– हरिपुरा (उत्तराखण्ड)

देश विशेष

दूरस्थ क्षेत्र

– श्रीधर बर्वे

सामान्य तौर पर किसी भी देश, प्रदेश का भू क्षेत्र सतत एक इकाई होता है। इसमें मुख्य भूमि से दूर समुद्र में स्थित द्वीप अपवाद होते हैं। किसी देश, प्रदेश के भू–भागों का अन्य देश, प्रदेश के भीतर स्थित होना विचित्र लगता है साथ ही इस कारण अजीब परिस्थितियाँ भी बन जाती हैं।

हमारे देश और विश्व में इस प्रकार के उदाहरण हैं।

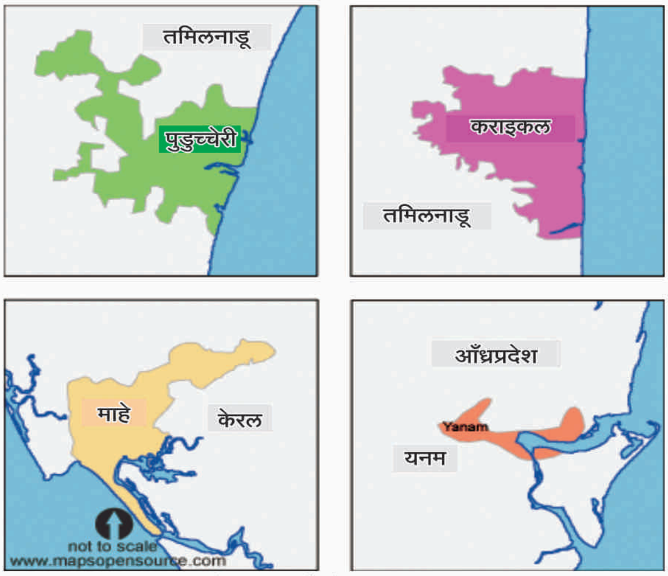

पुडुच्चेरी (भौगोलिक स्थिति)

सर्वप्रथम हमारे ही देश के एक प्रदेश (संघ क्षेत्र) पुडुच्चेरी का उदाहरण लें– पुडुच्चेरी को पहले पाण्डीचेरी कहा जाता था। इस क्षेत्र के चार भूखण्ड तीन प्रदेशों में स्थित है। पुडुच्चेरी और कराइकल तमिळनाडु में, माहे केरळ में और यनम आन्ध्रप्रदेश में स्थित है। पुडुच्चेरी और कराइकल बंगाल की खाड़ी तट पर, माहे आन्ध्रप्रदेश के पूर्वी गोदावरी जिले के भीतर स्थित है। चारों अन्तर्वर्ती क्षेत्रों में कोई भौगोलिक सातत्य नहीं है। इनके एक भाग से अन्य भाग में पहुँचने के लिए अन्य राज्यों से होकर जाना होता है। इन क्षेत्रों की एकता का सामान्य सूत्र यही है कि ये कभी एक साथ फ्रांस के उपनिवेश हुआ करते थे। १९५४ में फ्रांस ने इन बस्तियों को वास्तविक रूप से तथा १९६१ में वैधानिक रूप से भारत को हस्तान्तरित किया।

क्षेत्र का नाम	वर्ग कि. मी. में क्षेत्रफल	जन संख्या	भाषा
पुडुच्चेरी	२९०	९४६६००	तमिल
कराइकल	१६१	२००३१४	तमिल
माहे	०९	४१९३४	मलयालम
यनम	२०	५५६१६	तेलुगु

इन चार क्षेत्रों के अतिरिक्त एक और क्षेत्र फ्राँसीसियों के आधिपत्य में था– 'चन्द्रनगर' कोलकाता के पास। सबसे पहले चन्द्रनगर वासियों ने अपने क्षेत्र से फ्राँसीसी शासकों को जन बल से हटाया था। इसी से फ्राँस ने समय की मांग समझकर शेष बस्तियों (क्षेत्रों) को त्यागने का निश्चय किया।

पुर्तगालियों के आधिपत्य में चार क्षेत्र थे– गोआ, दीव, दमण एवं दादरा नगर हवेली। इनमें से प्रथम तीन अरब सागर तट पर तथा चौथा गुजरात और महाराष्ट्र की सीमा पर सागर तट से दूर था। वर्तमान में गोआ एक राज्य तथा अन्य तीन संघ शासित क्षेत्र हैं। दमण–दीव की एक इकाई तथा दादरा नगर हवेली अलग इकाई है। दमण खंभात की खाड़ी के पास तथा दीव सौराष्ट्र के दक्षिण में वेरावल के पास है। दोनों क्षेत्रों में काफी दूरी है। अरब समुद्र तट से लगभग पन्द्रह किलोमीटर दूर दादरा और नगर हवेली स्थित है। इसी भौगोलिक स्थिति का लाभ उठाकर १९५४ में गोआ के क्रांतिकारियों ने इस क्षेत्र को मुक्त करा लिया था। पूरे विश्व में पुर्तगाल के उपनिवेशों में सर्व प्रथम आजाद होने वाला यही क्षेत्र है। दादरा नगर हवेली पर पुन: आधिपत्य जमाने के लिए पुर्तगाल ने भारत के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय का सहारा भी लिया था किन्तु वह पुन: इसे नहीं हथिया सका। भारत भूमि के भीतर का भूक्षेत्र होने के कारण पुर्तगाल यहाँ अपनी सेना नहीं भेज सका।

१९५४ में आजाद होने के बाद से १९६१ में भारत में विलय होने तक दादरा नगर हवेली पृथक और स्वतन्त्र रहा।

क्षेत्र का नाम	क्षेत्रफल वर्ग कि. मी.	जन संख्या	भाषा
दमण (राजधानी)	७२	१९०८५५	गुजराती
दीव	४०	५२०५६	गुजराती
दादरा नगर हवेली (राजधानी खिलवासा)	४९१	३४३७०९	भीली, भिलोड़ी हिन्दी, मराठी गुजराती,

१९७५ में शेष पुर्तगाली साम्राज्य का विघटन आरम्भ हुआ। गोआ के अतिरिक्त पुर्तगाल का साम्राज्य ईस्ट इण्डीज के द्वीप तिमोर के पूर्वी भाग तथा चीन के मकाऊ में भी फैला हुआ था। १९७५ से २००० तक पूर्वी तिमोर इण्डोनेशिया से शासित रहा, फिर एक स्वतन्त्र देश के रूप में उदित हुआ। पूर्वी तिमोर का एक भूक्षेत्र ओकुसी अम्बेनो पश्चिमी तिमोर के उत्तर में स्थित है। १९९९ में मकाऊ पुन: चीन को मिला।

पुर्तगाली साम्राज्य से मुक्त होने वाला अफ्रीका का एक देश अंगोला भी है। दक्षिण की ओर अटलाण्टिक महासागर के पूर्वी तट पर अंगोला एक मझौले आकार का देश है जो १९७५ में स्वतंत्र हुआ। इसी देश का एक छोटा क्षेत्र मुख्य भूमि से दूर कांगो नदी के पार उत्तर में स्थित है, नाम है 'कबिण्डा' यह क्षेत्र खनिज तेल से समृद्ध है। अटलाण्टिक महासागर तट पर स्थित कबिण्डा का क्षेत्रफल ७२८३ वर्ग किलोमीटर और जनसंख्या छ: लाख है।

दूरस्थ क्षेत्रों के क्रम में स्पेन देश का भी स्थान है। यूरोप के दक्षिण पश्चिम भाग में स्थित स्पेन के दो दूरस्थ क्षेत्र अफ्रीका में भूमध्यसागर तट पर स्थित है। इनके नाम हैं– 'सेऊटा' जो जिब्राल्टर की सीध में अफ्रीका में स्थित है। दूसरा है 'मेलिले' जो अल्जीरिया की सीमा पर स्थित है।

रूस का भी एक दूरस्थ क्षेत्र है 'कलीनीन'। यह क्षेत्र कलीनीनग्राड रूस की मुख्य भूमि से अलग लातविया और पोलेण्ड से घिरा हुआ है। इस क्षेत्र में पहुँचने के लिए रूसी जनों को भूमि मार्ग से बेलारूस पार करना होता है।

एशिया में एक और अन्तर्वर्ती क्षेत्र ओमान देश का अलखसब है जो होरमुज जलडमरू मध्य में संयुक्त अरब अमीरात के उत्तर में स्थित है। ओमान देश फारस की खाड़ी में स्थित एक सुलतानी राज्य है। खसब का क्षेत्रफल ५२ वर्ग कि. मी. तथा जनसंख्या १८ हजार है।

अन्तर्वर्ती क्षेत्रों की समस्या से पीड़ित १६२ उन बस्तियों के निवासी थे जो भारत तथा बांग्लादेश की सीमाओं के भीतर बसे हुए थे। भारत की १११ बस्तियाँ बांग्लादेश के अन्दर और बांग्लादेश की ५१ बस्तियाँ भारत के भीतर थीं। इन बस्तियों के निवासी अपने देश से अलग–थलग विदेशी भूमि में घिरे हुए थे। यह समस्या १९४७ से चली आ रही थी।

इन बस्तियों के निवासियों को मुख्य देश की भूमि में पहुँचने के लिए, शिक्षा, चिकित्सा और सुरक्षा प्राप्ति के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। विदेशी भूमि के अन्दर घिरे हुए होने के कारण व्यावहारिक तौर पर इनके पचास हजार निवासी राज्यहीन नागरिकों के समान थे।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रमोदी की जून २०१५ में हुई बांग्लादेश यात्रा के समय यह समझौता हुआ जिसके अन्तर्गत इन बस्तियों का हस्तांतरण हो सका अर्थात बांग्लादेश के भीतर की भारतीय बस्तियाँ बांग्लादेश तथा भारत के भीतर की बांग्लादेशी बस्तियाँ भारत में विलीन हो गयीं। अनिश्चितता और असुरक्षा के साथ असुविधाओं को झेल रहे नागरिकों की समस्या ३१ जुलाई २०१५ को पूर्ण रूप से हल हो गयी।

इन अन्तर्वर्ती बस्तियों का विवाद १८वीं शताब्दी से चला आ रहा था। उस समय देश एक ही राज्य व्यवस्था के अन्तर्गत था। इस कारण कोई समस्या उत्पन्न नहीं हुई।

१९४७ में स्वतंत्रता के साथ भारत का विभाजन हुआ। समस्या भारत–पाकिस्तान के मध्य बनी रही। पाकिस्तान से बांग्लादेश के निर्माण के बाद भी समस्या हल नहीं हुई। अन्तत: यह समस्या २०१५ में हल हो पायी।

– इन्दौर (म. प्र.)

देशभक्त बालक

– मदनगोपाल सिंहल

''यदि तुम्हें कहीं से एक हीरा पड़ा हुआ मिल जाये तो तुम क्या करोगे?'' अध्यापक ने विद्यार्थियों से प्रश्न किया।

''मैं उसे बेचकर कार खरीदूँगा।'' एक बालक ने उत्तर दिया।

''मैं उसे बेचकर धनवान बन जाऊँगा।'' उसने उत्तर दिया।

''और तुम?'' अध्यापक ने तीसरे बालक से प्रश्न किया।

''मैं उसे बेचकर विदेशों की सैर करने जाऊँगा।'' उसने उत्तर दिया।

''और तुम?'' अध्यापक ने चौथे बालक से पूछा।

''मैं उसके मालिक का पता लगाऊँगा और मिल जाने पर वह हीरा उसे लौटा दूँगा।'' उसने उत्तर दिया।

''और यदि वह न मिला तो?'' अध्यापक ने उससे पुन: प्रश्न किया।

''तो मैं उसे बेच दूँगा और बेचने पर जो धन प्राप्त होता उसमें से आधा तो गरीबों में बाँट दूँगा और आधा देश के किसी सार्वजनिक निधि में जमा कर दूँगा।'' बालक ने उत्तर दिया।

''शाबास'' अध्यापक कह उठे– ''तुम बड़े होकर सचमुच ही देशभक्त बनोगे।''

और अध्यापक की भविष्य–वाणी सत्य ही हुई। वह बालक बड़ा हुआ तो सचमुच ही महान देशभक्त बना और विश्व में अपनी देशभक्ति के लिये प्रसिद्ध हुआ। उसका नाम था– **'गोपालकृष्ण गोखले'**। –

जीवदया

– वेदिका साहू

वह लड़का दौड़ता हुआ डॉक्टर के पास पहुँचा और उन्हें अत्यधिक आग्रह करके एक रोगी को दिखाने के लिए ले गया। डॉक्टर ने देखा कि एक कुत्ता सड़क पर पड़ा है।

वह उस लड़के पर झल्लाया, परन्तु लड़का अपनी बात पर अड़िग था।

उसने कहा– ''मनुष्य के समान कुत्ते को भी कष्ट होता है। हम मनुष्यों का ही दुख दूर करें और दूसरे प्राणियों का नहीं, क्या यह उचित है?'' डॉक्टर में सहानुभूति जागी और उसने कुत्ते का उपचार किया। कुछ दिनों में वह कुत्ता अच्छा हो गया।

वह सहृदय बालक ही आगे चलकर महामना पंड़ित मदन मोहन मालवीय कहलाया।

– सारंगपुरी (नगरी) (छ. ग.)

राजा

चित्रकथा-

राजा उदास था -
..क्या बात है महाराज़? अकेले बैठे क्या सोच रहे हैं?
मंत्री जी, मैं सोच रहा था जो राजा होता है वह हमेशा के लिए राजा बना रहता तो कितना अच्छा होता?
आपका विचार नया है महाराज, लेकिन..
लेकिन क्या मंत्री जी?
यदि ऐसा होता तो अभी भी वही राजा होते, जो सबसे पहले राजा बने..फिर आप राजा कैसे होते?..

गुरु ज्ञान

– समीर गांगुली

गोलू को जब गुस्सा आता है तो उसका सिर झुक जाता है, गाल फूल जाते हैं और नाक से गर्म हवा निकलने लगती है।

आज भी गोलू गुस्से में है। सारा घर पकवानों की गंध से महक रहा है। मगर उसे एक टुकड़ा भी मुँह में डालने की अनुमति नहीं है। उससे उपवास रखवाया गया है। सुबह–सुबह नहलाया गया है। कड़क सफेद कुर्ता और पैजामा पहनाया गया है। वह अपने को एक सफेद मुर्गे सा महसूस कर रहा है।

असल में आज माँ–पिताजी के धर्म गुरु घर आ रहे हैं। वे उनके यहाँ ही ठहरेंगे, बस उन्हीं के स्वागत में ये सब हो रहा है।

साढ़े सात साल का गोलू को यह भावनात्मक अत्याचार लग रहा है। फिर भी गोलू को गुरुजी के आने की प्रतीक्षा है, क्योंकि पापी पेट का सवाल है।

दोपहर को, चार शिष्यों के साथ गुरुजी उनके घर पधारे। गोलू ने देखा, नाटा कद, सफेद बाल, सफेद लंबी दाढ़ी, मोटा पेट और सफेद धोती, नंगे बदन।

बड़ी धूमधाम से गुरुजी का स्वागत हुआ। माँ–पिताजी के आग्रह पर उसे भी गुरुजी के पैर छूकर आशीर्वाद लेना पड़ा।

इसके बाद प्रवचन का दौर शुरू हुआ। कमरा गुरुभक्तों से भर गया था। भक्त हाथ जोड़कर सुन रहे थे और गुरु हिन्दी, बांग्ला और अंग्रेजी की मिली–जुली भाषा में सबको ना जाने आत्मा, परमात्मा, धर्मात्मा का ज्ञान दिए जा रहे थे। माँ–पिताजी भी यूँ आँखें फैलाकर सुन रहे थे जैसे गुरुजी खजाने का नक्शा बता रहे हों।

इधर गोलू का गुस्सा बढ़ता जा रहा था। पता नहीं कब तक ये बक–बक चलेगी। पता नहीं कब पूड़ी–छोले और लड्डू जलेबी खाने को मिलेगी।

लगभग ढ़ाई बजे प्रवचन समाप्त हुआ और फिर सबको खाना परोसा गया। गुरुजी ने केवल एक सेब खाया और एक छोटा ग्लास दूध पिया। गोलू मन ही मन बोला– ''लगता है नाश्ता जमकर किया है। तभी तो पेट इतना तना हुआ है।''

मगर गोलू को खाने में आनंद नहीं आया। ठंडी पूड़ी और ठंडे छोले। जलेबी भी नरम पड़ गई थी। सो माँ पिताजी के धर्म गुरु के प्रति गुस्सा और भी बढ़ गया।

शाम को पार्क से खेलकर लौटा तो देखा, माँ–पिताजी फिर से गुरुजी की सेवा में है। गोलू की ओर उनका बिल्कुल ध्यान नहीं। झूले से गिरकर उसका घुटना छिल गया था, किन्तु उस ओर भी ध्यान नहीं गया। यह सब छोड़कर गोलू चुपचाप अपने कमरे में चला गया।

अब फिर गोलू को गुस्सा आ गया था। गाल फूल गए थे। नाक से गर्म हवा निकल रही थी। दिमाग में एक योजना पक रही थी। सामने एक कैंची पड़ी थी।

आधी रात के बाद, जब सब सो रहे थे। गोलू चुपके से उठा। हाथ में कैंची थी। दबे पाँव वह गुरुजी के कमरे में जा पहुँचा। वहाँ हल्का प्रकाश था।

उसने गुरुजी की दाढ़ी पकड़ी और कैंची चला दी। अगले ही पल गुरुजी की तीन–चौथाई दाढ़ी चेहरे से अलग होकर गिर पड़ी।

गोलू का काम पूरा हो गया। वह दबे पाँव लौट चला। दरवाजा खोलने को हाथ बढ़ाया ही था कि एक आवाज सुनाई दी– ''ठहरो!''

उसके होश उड़ गए। गुरुजी जाग रहे थे। दूसरा आदेश आया– ''मेरे पास आओ।''

वह डरते–डरते गुरुजी के पास पहुँचा। कैंची अभी भी उसके हाथ में थी।

गुरुजी हल्की मुस्कान के साथ बोले– ''धन्यवाद मेरा भ्रम दूर करने के लिए।''

गोलू को आश्चर्य हुआ। वह चौंका, ''जीऽऽ''

गुरुजी आगे बोले– ''हाँ, भाई! मैं सोचता था, ये लंबी दाढ़ी, लंबी जटा और मेरे वस्त्र ही मेरी पहचान हैं। जैसा किसी प्रोडक्ट का ट्रेडमार्क होता है ना?''

गोलू कुछ न समझा।

गुरुजी आगे बोले– ''लेकिन भाई! तुमने एक झटके में इसे दूर कर दिया। मैं संकोच और दुविधा के कारण यह कदम नहीं उठा पाता, और जो भ्रम या शंका दूर करता है, उसे तो गुरु कहते हैं।''

गोलू को अब थोड़ी हिम्मत बंधी, जी में आया कि पूछे– ''ये घड़े जैसा पेट भी आपकी पहचान है। कर दूँ इसे भी पंचर।'' मगर इतना ही पूछ पाया– ''आपका पेट इतना बड़ा क्यों है? रोज लड्डू पूड़ी और खीर–पकवान खाते हैं ना?''

गुरुजी खुल कर हँस पड़े। फिर शांत भाव से बोले– ''ये पेट खा–खा कर नहीं फूला है, बल्कि एक प्रकार के प्राणायाम के कारण फूला है, जिसे कुंभक कहते हैं। बरसों से बस फलाहार ही करता हूँ और एक बार दूध पीता हूँ।''

गोलू को पहली बार लगा, गुरुजी ढोंगी साधु नहीं है। उसे लगा गुरुजी के बारे में कुछ और जानना चाहिए, उसने पूछा– ''आपने पढ़ाई की है क्या?''

गुरुजी बोले– ''हाँ, मैं केमिकल इंजीनियर हूँ और एक कंपनी का जनरल मैनेजर रह चुका हूँ। समाज को कुछ लौटाने और लोगों में भाईचारे का संदेश देने के लिए मैंने संन्यास लिया है।''

''ओह!'' कहकर गोलू जाना चाहता था। मगर गुरुजी बोले, ''अरे! जाते कहाँ हो, अधूरा काम पूरा तो कर जाओ, चलो कैंची से मेरी पूरी दाढ़ी साफ करो और फिर सिर के बाल भी उड़ा दो।''

गोलू को यह काम मजेदार लगा। वह तुरन्त ही शुरू हो गया। कचाकच, कचाकच।

गुरुजी ने भी विभोर होकर गाना शुरू कर दिया–

नागेन्द्रहाराय–त्रिलोचनाय।
भस्मांगराय महेश्वराय
नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
तस्मै नकाराय नमः शिवाय।।

आधी रात को गुरुजी को इस तरह गाता सुन दूसरे कमरे में सो रहे गोलू के माँ–पिताजी चौंक कर जाग उठे।

धीरे से गुरुजी के कमरे का दरवाजा खोला तो देखा गुरुजी की दाढ़ी–जटा साफ है। वो आँखें बंद किए मस्ती में गा रहे हैं।

गोलू भी उनके साथ अपनी बारीक आवाज में सुर मिला रहा है।

– मुंबई (महाराष्ट्र)

अखबारों की आपसी गपशप

– धीरज पोरवाल

मोनू के घर के पिछवाड़े एक छोटा सा अलग–थलग सा कमरा था, जिसे अटाला कमरा कहते थे। उसमें घर की टूटी–फूटी चीजें पटक दी जाती थीं और फिर फुरसत के समय वे सारी चीजें कबाड़ी वाले को बेच दी जाती थीं। उसी कमरे का एक कोना पुराने होते गए अखबारों के गट्ठर के लिए भी था।

सुबह जब ताजा अखबार आता, तो सबसे पहले मोनू के पिताजी उसे पढ़ते थे। बाद में दादाजी की बारी आती थी। वह बड़े आराम से चाय की चुस्कियों के साथ अखबार पढ़ते थे। सबसे आखिर में मोनू की दादी और माँ घर के सारे काम निपटाकर दोपहर के समय पढ़ती थीं।

इस तरह शाम तक जब सब अखबार पढ़ लेते, तो उस दिन के अखबार को अटाला कमरा में रख दिया जाता था। उस अटाला कमरा में पुराने अखबार की अपनी ही एक अलग दुनिया बस गई थी।

सारे पुराने अखबार एक–दूसरे के साथी बन गए थे। वे दिनभर तो आपस में बातें करते थे, लेकिन शाम होते ही वे अपने बीच उस दिन के अखबार की एक नए साथी के रूप में प्रतीक्षा करने लगते थे।

जब वह अखबार कमरे में आता, तो वे सभी उससे पूछने के बाद ही सोया करते थे, कभी रातों में वे सब उदास होकर सोते थे, जब तक सुनते कि कहीं आतंकवादियों ने कितनों को जान से मार डाला, तो कहीं गुंडों और बदमाशों ने लोगों के घरों में लूट–पाट मचाई, कहीं जाति के नाम पर खून–खराबा हुआ।

हाँ, रातों में सबके सब बहुत प्रसन्न होकर सोते थे जब सुनते कि कोई गरीबों के बच्चों को पढ़ा रहा है। कोई पशु–पक्षियों के लिए दाना–पानी की व्यवस्था करके उनके प्रति प्रेम जता रहा है।

ऐसे ही एक दिन की बात है, जब उस दिन के अखबार ने अपने साथी अखबारों को बताया कि एक रिक्षा वाले को पुलिस विभाग ने पुरस्कार दिया। उसका सम्मान भी किया गया, क्योंकि उसने दस लाख रुपयों से भरा बैग पुलिस थाने में जाकर जस का तस जमा कर दिया था।

किसी व्यापारी सवारी का बैग उसकी रिक्षा में छूट गया था। पुराने अखबारों ने जब यह खबर सुनी, तो खुश होकर बोले– ''वाह! इसका मतलब कि दुनिया में आज भी ईमानदारी बाकी है।''

उस रात अखबार चैन की नींद सोए थे। इस प्रकार अखबारों के बीच दुनिया की सुखद–दुखद घटनाओं पर चर्चा होती थी। एक दिन उस कमरे में जो अखबार आया वह आते ही बोला– ''भाई! मैं तुम्हें खबरें तो बाद में बताऊँगा, लेकिन उससे पहले मोनू के घर में क्या बातें चल रही है, यह नहीं सुनोगे?'' पुराने अखबारों ने शंका से पूछा– ''क्यों कहीं अखबार बंद करने की बात तो नहीं चल रही है?'' ''अरे नहीं भाई, घर में तो हम सबकी बड़ी तारीफ हो रही है। मोनू के पिताजी उसे प्रतिदिन अखबार पढ़ने की सलाह दे रहे थे, वह उसे कह रहे थे कि अखबारों में देश–विदेश, खेल जगत, हमारी परंपराएँ और हमारे इतिहास के बारे में बहुत सी जानकारियाँ रहती हैं। इसलिए अखबार अवश्य पढ़ना चाहिए।''

उस दिन का नया अखबार खुशी से उछल–उछलकर बोल रहा था। अपने बारे में इतनी अच्छी बातें सुनकर सारे अखबार इतने खुश हो गए कि वे उस नए अखबार से उस दिन की खबरें पूछे बिना ही खुश होकर सोने चले गए थे।

– जावरा (म. प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला के सही उत्तर–

निषादराज गुह, लक्ष्मण, मिस्र, बिहार, तमिल, दादाजी कोण्डदेव, राजवैद्य जीवकन, वीर सावरकर, रावल मल्लीनाथ, दक्षिण कोरिया।

मैं चन्द्रशेखर बन जाऊँ

– संतोष श्रीवास्तव 'सम'

माँ मेरी भी मूँछें हो तो,
चन्द्रशेखर बन जाऊँ।
सब बच्चों के बीच खड़ा हो,
क्रांति का अलख जगाऊँ।।

एक मुझे तू दे बंदूक,
कमर में उसे लटकाऊँ।
छोटी सी धोती पहनूँ,
सरपट बढ़ता जाऊँ।।

देश भक्ति का भाव देश के,
कोने-कोने में जागे।
मेरी मूँछों के ताव देख,
दूर शत्रु सब भागे।।

मेरे पिता का नाम स्वतंत्र,
और बताऊँ अपना आजाद।
जन्मों-जन्मों से हुआ माँ,
इस धरती पर मैं आबाद।।

माँ जीते जी मैं कभी,
ना हाथ आऊँ विदेशी के।
जब अंतिम गोली बचे तो,
पड़े मेरी वो कनपटी पे।।

माँ कसम खा तू मेरी,
ना कभी घबरायेगी।
जब शहीद मैं हो जाऊँ,
आँसू तू न बहायेगी।।

माँ कितना अच्छा हो मैं,
भारत का भाग्य बनाऊँ।
इस आजाद भारत का,
सच्चा सिपाही कहलाऊँ।।

माँ मेरी भी मूँछें हो तो,
चन्द्रशेखर बन जाऊँ।
सब बच्चों के बीच खड़ा हो,
क्राँति की अलख जगाऊँ।।

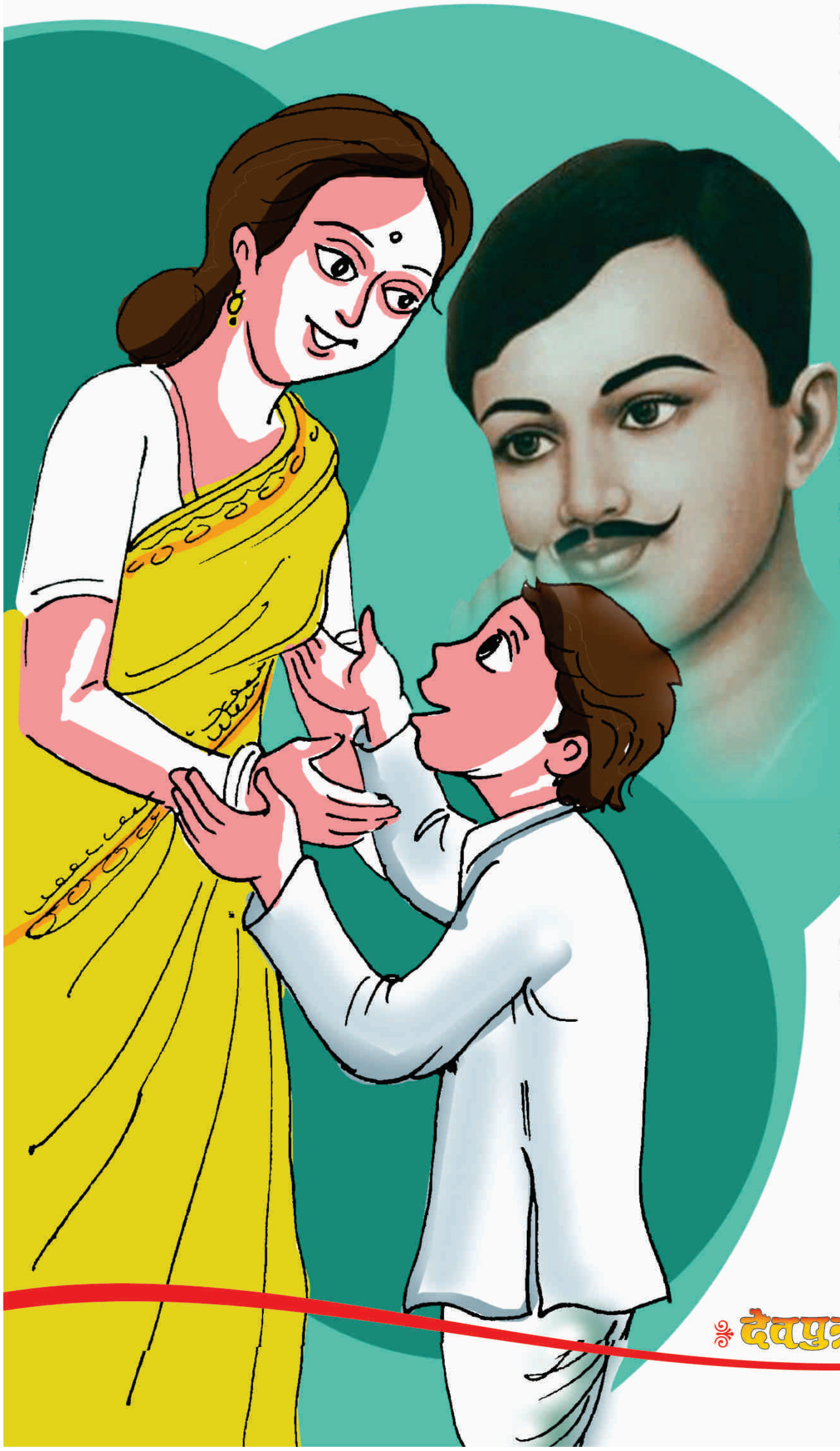

– काँकेर (छत्तीसगढ़)

अँगुलियों से पढ़ाई

– पवित्रा अग्रवाल

प्रणव बहुत वर्षों के बाद अपनी छोटी बहन और माँ के साथ नाना–नानी के पास गाँव आया था। गाँव में उसके मामाजी के दो बेटे भी थे जो प्रणव से कुछ वर्ष बड़े थे। उनका नाम धनेश और धरेश था। प्रणव कक्षा आठ में पढ़ता था पर वह साधारण बच्चों से अलग था। वह जन्म से दृष्टिहीन था। उसके जन्म के बाद माँ–पिताजी बहुत दुखी थे। डॉक्टरों को भी दिखाया था पर आँखों में दृष्टि वापस नहीं आ सकी।

धनेश, धरेश और उनके कुछ मित्र प्रणव से मिलने को बहुत उत्सुक थे क्योंकि सभी जानते थे कि प्रणव नेत्रहीन है फिर भी आठवीं कक्षा में पढ़ता है और कम्प्यूटर भी सीख रहा है। उन सबके लिए यह एक आश्चर्य था और मिल कर वह बहुत कुछ उससे जानना चाहते थे। गाँव के विद्यालयों में भी सर्दी की छुट्टियाँ शुरू हो गई थी। सुबह होते ही हरीश के मित्र प्रणव से मिलने आ गये। थोड़ी ही देर में सब मित्र बन गए थे।

सबका पहला प्रश्न यही था कि जब तुम देख नहीं सकते तो लिखना–पढ़ना कैसे सीखा और परीक्षा में कॉपी कैसे लिखते हो?

प्रणव ने कहा– ''पहली बात तो मैं आप सबको बता दूँ कि मैं सामान्य विद्यालय में नहीं पढ़ता, मैं दृष्टिबाधितों के विद्यालय में पढ़ता हूँ। वहाँ हमारे कुछ शिक्षक भी दृष्टिबाधित हैं, जिस लिपि में हम पढ़ते हैं उसे पढ़ने के लिए आँखों की नहीं हाथों की आवश्यकता होती है। इसे अँगुलियों से छूकर या कहूँ कि टटोल कर पढ़ा जाता है।''

''तो तुम्हारे कम्प्यूटर भी इसी लिपि के आधार पर बने होंगे?'' ''हाँ उस पर भी हम टटोल–टटोल कर काम करते हैं।''

''तो क्या तुम्हारे पाठ्यक्रम की सभी किताबें उसी लिपि में मिल जाती हैं?''

''हाँ उस लिपि में हर तरह की किताबें मिलती हैं कोई की भी। बच्चों, बड़ों के लिए कहानी, कविता और सामान्य ज्ञान की भी। यहाँ तक कि रामायण, गीता, आदि भी इस लिपि में हैं। कोई पुस्तक हम लोगों के लिए उपयोगी होती है तो हमारे विद्यालय में उसे इस लिपि में बदल लेते हैं।''

''उत्साहित होकर धनेश ने कहा– ''प्रणव इस लिपि को क्या कहते हैं? क्या तुम अपनी कोई पुस्तक लाये हो ताकि हम भी देख सकें कि वह कैसी होती है और तुम हमको पढ़कर भी दिखाओ।''

''हाँ इस लिपि को ब्रेल लिपि कहते हैं, इस लिपि की कुछ बाल कहानियों की पुस्तकें मैं अपने साथ लाया हूँ। अभी दिखाता हूँ फिर पढ़कर भी दिखाऊँगा।''

पुस्तक देखकर सब चौंक गए, इस पर तो कुछ लिखा ही नहीं है। यह देखो इसमें उभरे हुए डॉट डॉट बने हुए हैं, इसको हम हाथ की अँगुलियों से छूकर पढ़ते हैं। सब बच्चों ने छू–छूकर उसे देखा पर उन्हें तो कुछ समझ में नहीं आया फिर प्रणव ने एक अंश पढ़कर सुनाया सब बच्चे दाँतों तले अँगुली दबाये खड़े थे।

धरेश ने कहा– ''यह तो कमाल हो गया प्रणव पर इसका आविष्कार किसने किया और इसकी आवश्यकता उन्हें क्यों अनुभव हुई?''

''भाई कहा गया है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। हर नए आविष्कार के पीछे यही मूल मन्त्र काम करता है। इसका आविष्कार फ्रांस के लुइस ब्रेल ने किया था।''

''क्या वह भी दृष्टिहीन थे?''

''वह जन्म से तो नेत्रहीन नहीं थे पर जब वह तीन वर्ष के थे तो अपने पिता के साथ कभी–कभी उनके चमड़े के कारखाने में चले जाते थे। एक दिन चाकू से चमड़ा काटते समय चाकू उनकी आँख में लग गया और खून बहने लगा। उनकी आँख पर पट्टी बाँध दी गई पर कुछ दिन बाद दूसरी आँख में भी संक्रमण हो गया। इस तरह वह पाँच वर्ष की आयु तक पूरी तरह से अंधे हो गए थे। उनका जीवन बड़ी कठिनाई भरा था पर वह बहुत तेज बुद्धि के बच्चे थे।''

सभी बच्चे ध्यान से प्रणव को सुन रहे थे।

''दस वर्ष की आयु में उनका प्रवेश पेरिस में एक नेत्रहीनों के विद्यालय में करा दिया गया। वहाँ 'वेलटिन हाउ' लिपि में बच्चों को शिक्षा दी जाती थी। उससे पढ़ने में सहायता तो मिलती थी पर वह अधूरी थी। उन्हीं दिनों फ्रांस के एक सेना अधिकारी कैप्टन चार्ल्स उस विद्यालय में भाषण देने आये। भाषण में उन्होंने सैनिकों के लिए रात के अँधेरे में पढ़ी जाने वाली एक लिपि 'नाइट राइटिंग' के बारे में बताया। सुनकर ब्रेल को लगा कि जिस लिपि को सैनिक अँधेरे में पढ़ सकते हैं शायद दृष्टिबाधित भी पढ़ सकते होंगे।

''फिर?''

बालक ब्रेल 'नाईट राइटिंग' लिपि के बारे में और अधिक जानने की इच्छा से उन सैनिक अधिकारी से पुनः मिला और उस विशेष लिपि के बारे में जानकारी चाही। उस लिपि में १२ बिन्दुओं की सहायता ली जाती थी पर वह भी पूरी तरह सक्षम नहीं थी। गणित में उपयोगी चिन्ह, पूर्ण विराम आदि का उसमें अभाव था। ब्रेल ने १२ की जगह ६ बिन्दुओं का उपयोग करते हुए ६४ अक्षर और चिन्हों वाली लिपि तैयार की। उसमें नेत्रहीनों की आवश्यकता के अनुसार कई आवश्यक जानकारियों को भी उसमें जोड़ा। सन् १८२४ में १५ वर्ष की आयु में बालक ब्रेल ने इसका आविष्कार किया। ४३ की आयु में उनकी मृत्यु हो गई थी। किन्तु उनके जीवन काल में उस लिपि को बहुत महत्व नहीं मिल पाया था।

बहुत बाद में सब देशों में दृष्टिबाधितों के लिए उस लिपि के महत्व को समझा और लुइस ब्रेल के नाम पर दुनिया में यह ब्रेल लिपि के नाम से प्रसिद्ध हुई। उन्हें मरणोपरांत बहुत सम्मान मिला। उनके नाम से डाक टिकट निकले, उनके घर को संग्रहालय का रूप दिया गया। देशी–विदेशी बहुत सी भाषाओं की पुस्तकें इस लिपि में हैं और आवश्यकता अनुसार किसी भी पुस्तक को ब्रेल में बदल सकते हैं।

मालूम है मित्रो! अब तो घड़ी, मोबाइल और भी बहुत सी सुविधाजनक वस्तुएँ इस लिपि के माध्यम से नेत्रहीनों के लिए बन गए हैं।

''तो क्या इनको नौकरी भी मिल जाती है?''

''हाँ छोटी–बड़ी हजारों जगह यह काम कर रहे हैं।'' धरेश के मित्र ने कहा– ''अरे वाह यह लिपि तो नेत्रहीनों के लिए वरदान है। दूसरे गाँव में मेरा चचेरा भाई भी नेत्रहीन है। चाचाजी उसके भविष्य को लेकर बहुत दुखी रहते हैं। तुमसे विद्यालय आदि की सभी आवश्यक जानकारी लेकर उनको भेजूँगा। मुझे उसके लिए भी आशा की एक किरण दिखाई दे रही है। धन्यवाद मित्र! इतनी अच्छी जानकारी के लिए। जब तक तुम यहाँ हो हम प्रतिदिन मिलेंगे और नित्य हमें अपनी पुस्तक में से कहानी पढ़कर सुनाना।''

''हाँ सुनाऊँगा और आप सबसे भी सुनूँगा।''

''ठीक है, बहुत देर हो गई मित्रो! समय का पता ही नहीं चला। अभी हम घर जा रहे हैं, संध्या को फिर मिलेंगे।''

– हैदराबाद (तेलंगाना)

लघुकथा

संकल्प

– डॉ. योगेंद्र नाथ शुक्ल

विद्यालय में ध्वजा-रोहण के बाद स्वतंत्रता संग्राम सेनानी श्यामलाल जी ने कहा कि वे भाषण नहीं देंगे, बच्चों से बातें करेंगे। ''बच्चो! क्या आपने अपने जीवन का एक दिन भी कभी राष्ट्र को दिया है?'' पांडाल में सुई पटक सन्नाटा छा गया।

''बच्चो! क्या आपने देश को, अपने घर और यहाँ के लोगों को परिवार की तरह माना है?'' पांडाल में वही सन्नाटा। ''बच्चो! क्या आपने कभी घर के सामने बन रही सड़क में डलने वाले सीमेंट की जानकारी ली है?''

पांडाल में वही सन्नाटा। ''बच्चो! क्या आपने देश की संपत्ति की, अपने घर की चीजों की तरह सुरक्षा की है।'' पांडाल में फिर वही सन्नाटा।

''प्यारे बच्चो! देश की पहचान नागरिकों से नहीं होती, बल्कि जागरूक नागरिकों से होती है। संकल्प लीजिए कि आज से आप सब बच्चे जागरूक नागरिक बनेंगे।'' इस बार सुई पटक सन्नाटा टूटा।

''हम देश को अपना घर मानेंगे।'' ''हम जागरूक नागरिक बनेंगे।'' ''हम जागरूक नागरिक बनेंगे।'' सारा पांडाल गूंज उठा।''

– इन्दौर (म. प्र.)

कविता

नदी नदी

– धर्मेश कुमार सिंह

– गोण्डा

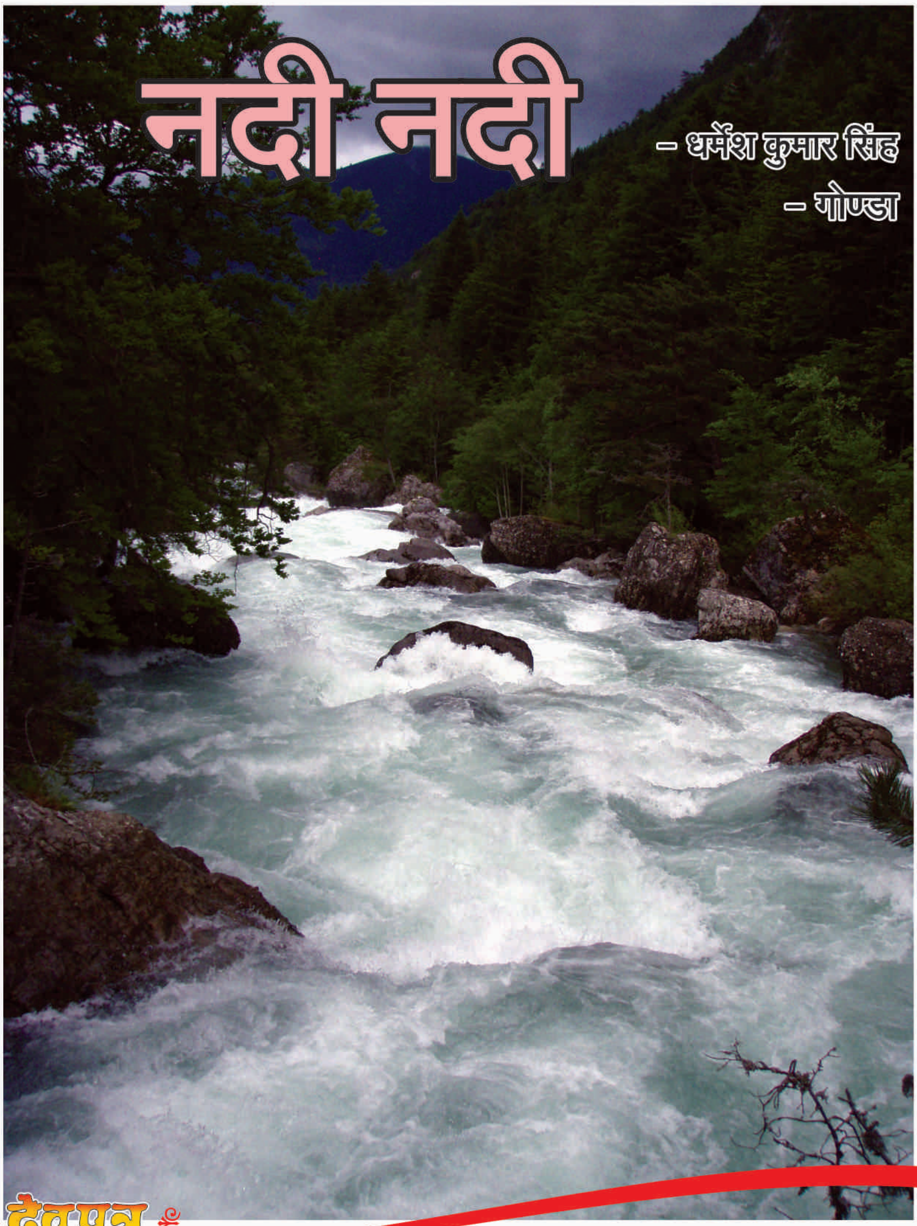

नदी, नदी
तुम कहाँ चली
इतनी तेजी से तुम बहती
आखिर इतनी क्यों जल्दी?
पर्वत से तुम नीचे आती
घाट-घाट से मिलती जाती
किसी जगह तुम कभी ना रुकती
आखिर किससे मिलने की जल्दी?
बादल से तुम दौड़ लगाती
कल-कल की आवाज सुनाती
कितनी मधुर ध्वनि तुम्हारी
जैसे कान्हा की बांसुरी।
निर्मल, निर्झर बहती तुम
घाट-घाट से कहती तुम
अभी ना रोको जाने दो
समय नहीं है मत रोको।
बहकर जाती कहाँ बताओ
अपने घर का पता बताओ
मुझको मिलना है तुमसे
मीठी बातें करना है तुमसे।

बिन्दु

– अलिशा सक्सेना

इस दिन मैं सुबह सोकर उठी तो मैंने देखा मेरी बालकनी में एक चिड़िया चहचहा रही थी। चिर र चिर्र चिर्र मैंने जाकर देखा तो वो एक नीले रंग की चिड़िया थी जिसके एक पंख पर एक धब्बा था सफेद रंग का मैं जल्दी दौड़कर अन्दर गई और एक कटोरी में पानी लाकर रख दिया और परदे के पीछे छिप गई। मैंने देखा उसने थोड़े से दाने खाये पानी पिया। और उड़ गई बस फिर क्या था वो प्रतिदिन आती पानी–दाना खाती और उड़ जाती।

उसके पंख पर धब्बा होने के कारण मैंने उसका नाम बिन्दु रख दिया था। बिन्दु सुबह जल्दी आती थी इसलिए मैं भी जल्दी सोकर उठने लगी। मैंने आज सुबह से दाना–पानी रखा पर बिन्दु का कहीं भी अता–पता नहीं था। मैं उदास हो गई दिनभर मेरा मन कहीं नहीं लगा।

शाम को मैं बागीचे में खेल रही थी। तो मेरी गेंद एक झाड़ी में चली गई जब मैं गेंद उठा रही थी तो पास में मुझे एक चिड़िया मरी हुई दिखी। मेरा दिल जोर से धड़कने लगा। कहीं ये बिन्दु तो नहीं मैंने उसके पास जाकर उसके पंख पर बिन्दु का चिह्न देखना चाहा। पर मुझे अंधेरा होने के कारण कुछ नहीं दिखा। मैं भारी मन से घर आई और भोजन करके सो गई।

चिर्र चिर्र चिर्र इस आवाज ने मुझे जगा दिया। मैं दौड़कर बालकनी में गई। वहाँ बिन्दु फुदक–फुदक कर शोर मचा रही थी मैं उसे देखकर खुश हो गई। मैंने झटपट उसके लिये दाना–पानी रखा उसने खाया और आकाश में उड़ गई। मैं समझ गई शायद झाड़ी वाली चिड़िया धूप, भूख–प्यास से मरी होगी।

– अहमदाबाद (गुजरात)

विवाह में नहीं पहुँचे पाश्चर

– रमाकान्त 'कान्त'

प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफेसर लुई पाश्चर को कौन नहीं जानता। 'रैबीज के टीके' (कुत्ते द्वारा काटने पर उसकी समुचित चिकित्सा के लिए) का आविष्कार करके उन्होंने चिकित्सा विज्ञान एवं मानवता को अनुपम उपहार प्रदान किया था।

निश्चय ही काम के प्रति समर्पण के बिना ऐसे आविष्कार संपन्न नहीं हो सकते। पाश्चर ने जब कुत्ते के काटे लोगों को पागल होकर अमानवीय तरीके से मरते देखा, तब उनकी संवेदना जाग गई और उन्होंने निश्चय किया कि वे इस बीमारी से मुक्ति के लिए समुचित उपचार खोजने का प्रयास करेंगे।

उन्होंने यह काम पूर्ण समर्पित भाव से किया। उनकी एकाग्रता का यह स्तर यह था कि वे खाना–पीना और सोना छोड़कर दिन–रात इस कार्य में लगे रहते थे। जब यह आविष्कार परिणामोन्मुख स्वरूप प्राप्त कर रहा था उस समय की एक अविस्मरणीय घटना उल्लेखनीय है जिसके द्वारा कार्य के प्रति उनके समर्पण की गहराई का ज्ञान होता है।

उन दिनों प्रो. पाश्चर की युवा वय थी। उनका विवाह विश्वविद्यालय के कुलपति की बेटी से निश्चित हो गया। विवाह का स्थान, दिन व समय तय कर दिया गया। मन पसंद लड़की से विवाह होने की बात से लुई पाश्चर बहुत प्रसन्न थे। उनकी प्रसन्नता व्यक्त हो रही थी, उनकी प्रयोगशाला में। विवाह तय हो जाने के बाद वे और भी तन्मयता से प्रयोगशाला में काम करने लगे थे। लगता था, जैसे विवाह तय होने के बाद उन्होंने नई दवा की खोज किये जाने वाले लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित कर दिया है।

कार्य के प्रति उनकी तन्मयता का हाल यह था कि जिस दिन विवाह समारोह आरंभ हुआ, पाश्चर वहाँ नहीं पहुँचे। सब लोग उन्हीं के बारे में पूछ रहे थे। उनके सभी परिजन, मित्र और लड़की के परिवार वाले आश्चर्य चकित थे। लड़की स्वयं नहीं समझ पा रही थी कि विवाह का समय हो गया है परन्तु पाश्चर चर्च क्यों नहीं पहुँच रहे?

सब लोग उन्हें चारों ओर खोजते फिर रहे थे। लड़की के पिता जो विश्वविद्यालय के कुलपति थे, मंद–मंद मुस्कुरा रहे थे। उधर एक मित्र पाश्चर को खोजते हुए प्रयोगशाला में जा पहुँचा।

उस समय पाश्चय अपने प्रयोग में व्यस्त थे। मित्र बोला– ''अरे, हद हो गई आज तुम्हारा विवाह है, चर्च में तुम्हारी प्रतीक्षा हो रही है। बंद करो अपना यह प्रयोग, पहले वहाँ चलो। यह काम तो बाद में भी हो जाएगा।''

तल्लीनता में डूबे पाश्चर ने मित्र की ओर देखे बिना कहा– ''थोड़ा रुको मित्र! कई वर्षों से मैं जो प्रयोग कर रहा हूँ, अब उसके परिणाम निकल रहे हैं। ऐसा न हो कि मेरा वर्षों का परिश्रम बेकार चला जाए।''

जब पाश्चर यह बात कह रहे थे, उस समय लड़की के पिता यानी कि कुलपति महोदय भी वहाँ आ गए। उन्होंने पाश्चर की बात सुन ली थी। पाश्चर के मित्र

को हाथ पकड़कर खींचते हुए उन्होंने फुसफुसाकर कहा– ''सचमुच प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है, इसमें संपूर्ण मानवता का हित निहित है। क्या फर्क पड़ता है, विवाह समारोह हम बाद में कर लेंगे।''

पूरे साढ़े तीन घंटे बाद जब काम समाप्त हुआ तब पाश्चर हो चेतना आई कि आज तो उनका विवाह होना है। वे प्रयोगशाला में पहने हुए कपड़ों में ही चर्च जा पहुँचे। वहाँ उनका बेसब्री से इंतजार हो रहा था। तब जाकर उनका विवाह हुआ। किन्तु यह सच है कि उस दिन के परिणाम रैबीज के टीके के लिए सबसे महत्वपूर्ण थे जो उन्होंने अपने विवाह समारोह को टालकर प्राप्त किए थे।

– जयपुर (राजस्थान)

स्वयं बनें वैज्ञानिक

एक के बाद एक आलपिन

मूल – प्रो. राजीव तांबे
अनुवाद – सुरेश कुलकर्णी

प्यारे मित्रो! आज एक नया प्रयोग हम करते हैं। हमारे पास आलपिन सहजता से उपलब्ध है, इसलिए उनका ही प्रयोग करते हैं। हमें लगने वाला सामान–

२ काँच के गिलास।

पानी।

एक चम्मच लिक्विड सोप।

५० आलपिन।

एक चम्मच।

ठीक है अब हो जाइये शुरू। एक काँच के गिलास में किनारे तक पानी भरे। अब इस गिलास में एक–एक करके आलपिन डालना शुरू करें। गिलास के किनारे से सटकर एक–एक आलपिन गिलास में डाले। अगर गिलास का पानी बाहर गिरने लगे तो आलपिन डालना बंद कर दें।

काँच के गिलास में कितनी आलपिन डाली यह गिने। जो होशियार विद्यार्थी है वे शेष आलपिन गिन लेंगे। ५० से घटाकर यह हिसाब लगा लेंगे कि कितनी आलपिन गिलास में डाली गयी।

अब दूसरे गिलास में एक चम्मच लिक्विड सोप डाले और पानी डालकर धीरे से वह द्रव एकत्रित कर लेवें। अब इस गिलास को किनारे तक पानी से भरें। अब उपरोक्त क्रिया अर्थात आलपिन एक–एक करके डालना दोहराये। जब पानी गिरने लगे तब रुकना है।

अब हमें आलपिन गिनना है। आपने क्या देखा? कि लिक्विड सोप में अधिक आलपिन एकत्रित हो गयी है। बिलकुल सही।

यह क्यों होता है इसका उत्तर भी बता देते हैं।

जब हमने पहले गिलास में साधा पानी डाला और धीरे–धीरे आलपिन डाल रहे थे जब पानी में स्थित सतह घनत्व के कारण वह पानी में चली गयी। पानी में जो घनत्व तनाव होता है उसी कारणवश में पानी में जाती परन्तु जैसे उनकी संख्या बढ़ती पानी गिलास के बाहर गिरता है। हम जब नहाते हैं तब भी यह देखते कि अगर बाल्टी भरी हुई है और हम उसमें मग तिरछा डालते हैं तो पानी बाहर न गिरते हुए मग के अंदर जाता है।

परंतु और पानी डाले तो निश्चित रूप से पानी गिरता है। बस यही तकनीक यहाँ काम करता है। परन्तु जब पानी में लिक्विड सोप डालते हैं तो पानी का घनत्व बढ़ जाता है और वह वक्रता धारण करता है। इसलिए लिक्विड सोप वाले काँच के गिलास में आलपिन अधिक समाहित होती है कारण पानी में बाह्य पदार्थ का सम्मिलित होने से उस पानी को घनता में उसके मूल तत्व में बदल हो जाता है।

अब आप लिक्विड सोप की जगह तेल डालकर या दूध डालकर देखे क्या होता है और हमें बताइये।

– पुणे (महाराष्ट्र)

पेड़ों से

– सतीश उपाध्याय

गोलू चिंटू और जतीन
पौधे लेकर आए तीन।
तीनों ने मिलकर रोपे
गुलमोहर, बरगद और नीम।।
पौधे जब बढ़ जाएंगे
सबको पास बुलाएंगे।
गुलमोहर के चटकीले फूल
लाल-लाल कुछ पीले फूल।।
जब जब, घर में आएंगे
वे फूलों को, बरसाएंगे।
छूएगा बरगद आकाश
सब आएंगे इसके पास।।
जब देगा यह शीतल छाँव
आएगा फिर, सारा गाँव।
घर में होगा, एक हकीम
आँगन का, वह मेरा नीम।।
रखेगा सबको, खुशहाल
फूल-पत्तियाँ और डगाल।
आओ बढ़ाएँ, हम हरियाली
पेड़ों से मिलती खुशहाली।।

– कोरिया मनेन्द्रगढ़ (छत्तीसगढ़)

आपकी पाती

महोदय,

सविनय नम्र निवेदन है कि मैं 'देवपुत्र' पत्रिका का नियमित पाठक हूँ। यह भारतीय संस्कृति के अनेक प्रसंगों से बाल पीढ़ी को परिचित कराकर उन्हें संस्कारित करने का प्रशंसनीय प्रयास कर रही है।

कोरोना महामारी के चलते कुछ व्यवधान के बाद 'देवपुत्र' पत्रिका का नवम्बर २०२० का अंक प्राप्त कर बहुत अच्छा लगा। पत्रिका की सामग्री बच्चों की बुद्धि का विकास कर उनके ज्ञान में अभिवृद्धि करती है। 'देवपुत्र' पत्रिका का प्रकाशन निरन्तर चलता रहे, हमारी यही कामना है।

– सुरेशचन्द्र सर्वहारा, कोटा (राजस्थान)

लोरी गीत

रात अँधेरा ओढ़े आयी

– राम करन

टँके–टँकाए जुगनू तारे,
टिमटिम टिमटिम करते सारे।
एक सलोना चाँद बिठाई,
रात अँधेरा ओढ़े आयी।।

नानी आई, मामा आ रे!
दादी किस्सा एक सुना रे!
आयी आयी हमें जम्हाई,
रात अँधेरा ओढ़े आयी।।

झींगुर झाँझ से झीं–झीं–झा रे!
सूनसान में बजते जा रे!
कौने इक निंदिया बैठाई,
रात अँधेरा ओढ़े आयी।।

लल्ला–लल्ला, ला–रे! ला–रे!
मीठी लोरी एक सुना रे!
सपने में सपना फैलाई,
रात अँधेरा ओढ़े आयी।।

– मिश्रौलिया (उ. प्र.)

प्रसंग

विज्ञान और धर्म

– शिवकुमार गोयल

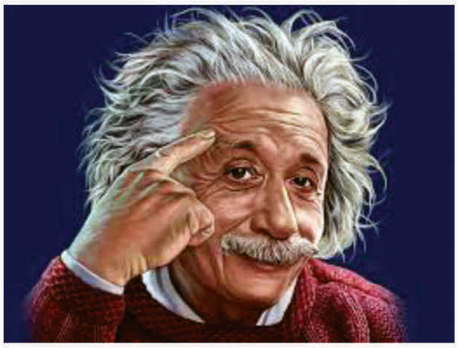

महान वैज्ञानिक **अलबर्ट आइंस्टीन** विज्ञान की अपेक्षा ईश्वर को कहीं अधिक महत्वपूर्ण मानते थे। एक दिन ब्रिटेन के कुछ वैज्ञानिक उनसे भेंट करने आए। एक वैज्ञानिक ने अपनी डायरी आगे कर संदेश लिखने की प्रार्थना की। आइंस्टीन ने लिखा– ''अकेले ज्ञान–विज्ञान के माध्यम से मानव का कल्याण संभव नहीं है। उच्च नैतिक मानदण्ड ही मानवता को जीवित रख सकते हैं। यह मेरे वैज्ञानिक जीवन का निष्कर्ष है।''

सन् १९५५ में प्रिंसटन अस्पताल में वे मृत्यु शैया पर थे। डॉक्टरों ने उनके शल्यक्रिया का सुझाव दिया तो उन्होंने उसे कराने से इंकार करते हुए कहा– ''मैंने अपने तमाम कार्य पूरे कर लिए हैं। अब मैं बनावटी तरीके से जिन्दगी ढोने को तैयार नहीं हूँ।'' उन्होंने मृत्यु से कुछ समय पूर्व अपने एक मित्र से कहा– ''संसार आधुनिकतम शस्त्रास्त्रों के कारण विनाश के कगार पर बैठा है। उसे धर्म और मानवता की भावना ही बचा सकती है।''

– पिलखुआ (उ. प्र.)

केप्टन गुरुबचन सिंह सलारिया

अन्य संस्कारों की भाँति ही शौर्य के संस्कार भी बहुधा परम्परा से प्राप्त होते हैं। केप्टन गुरुबचन सिंह को भी सेना में भर्ती होकर मातृभूमि की सेवा करने का संस्कार अपने फौजी पिता से ही प्राप्त हुआ। २९ नवम्बर १९३५ को शकरगढ़ के जनवल गाँव जो अभी पाकिस्तान में है में जन्मे गुरुबचन बचपन से ही पिता के सैनिक शौर्य के सच्चे किस्से सुन-सुनकर इतना प्रभावित थे कि १९४६ में वे बेंगलुरु के किंग जार्ज रायल मिलिट्री कॉलेज में भर्ती हो गए और १९५३ में नेशनल डिफेंस अकादमी से उत्तीर्ण होकर कारपोटल बनकर सेना में आ गए।

घटना उन दिनों की है जब बेल्जियन कांगो में गृह युद्ध छिड़ा हुआ था और विदेशी लोग स्वतंत्रता के उपरांत भी स्थानीय लोगों का शोषण कर रहे थे। संयुक्त राष्ट्र संघ ने स्थिति पर नियंत्रण के लिए भारत से अनुरोध किया। फलस्वरूप ब्रिगेडियर के. ए. एस. राजा के नेतृत्व में वर्ष १९६१ के मार्च से जून माह के मध्य ९९ इंफैंट्री ब्रिगेड हवाई व समुद्री मार्ग से कांगो की राजधानी लियोपोल्ड विले भेज दी गई जो आरंभ में अल्बर्ट विले में और शांति स्थापना के बाद एलिजाबेथ विले चली गई। सितम्बर १९६१ में युद्ध विराम लागू हुआ पर नवम्बर में विद्रोही फिर उत्पात व हत्याएं करने लगे। सेना को पुन: कठोर होना पड़ा।

विदेशी घुसपैठिये संयुक्त राष्ट्र के सैन्य दस्तों को एक-एक कर समाप्त कर देना चाहते थे। ५ सितम्बर १९६१ कांगो के एलिजाबेथ विले के चारों ओर से मार्ग रोक लिए गए। सेना का पथ अवरुद्ध देख केप्टन सलारिया अपने सोलह सैनिकों की टुकड़ी लेकर विरुद्ध डटे सौ से अधिक विद्रोहियों पर टूट पड़े। गोलियों के साथ खुखरियाँ भी खून पी रही थीं। केप्टन पर विद्रोही सार्जेंट ने गोलियों की वर्षा ही कर दी। गर्दन और शेष शरीर में गोलियाँ धंसती गईं पर केप्टन अडिग बने डटे रहे। साथी सैनिकों की खुखरियों की चमक और धार से आहत विद्रोही तो भाग खड़े हुए पर केप्टन गुरूबचन सिंह सलारिया की मृत्यु हो गई। अपनी असाधारण कर्त्तव्य परायणता के लिए मर कर भी अमर हो गए इस रणबांकुरे को भारत सरकार ने **'परमवीर चक्र'** का सम्मान दिया।

–

अनोखी सलाह!

चित्रकथाः देवांशु वत्स

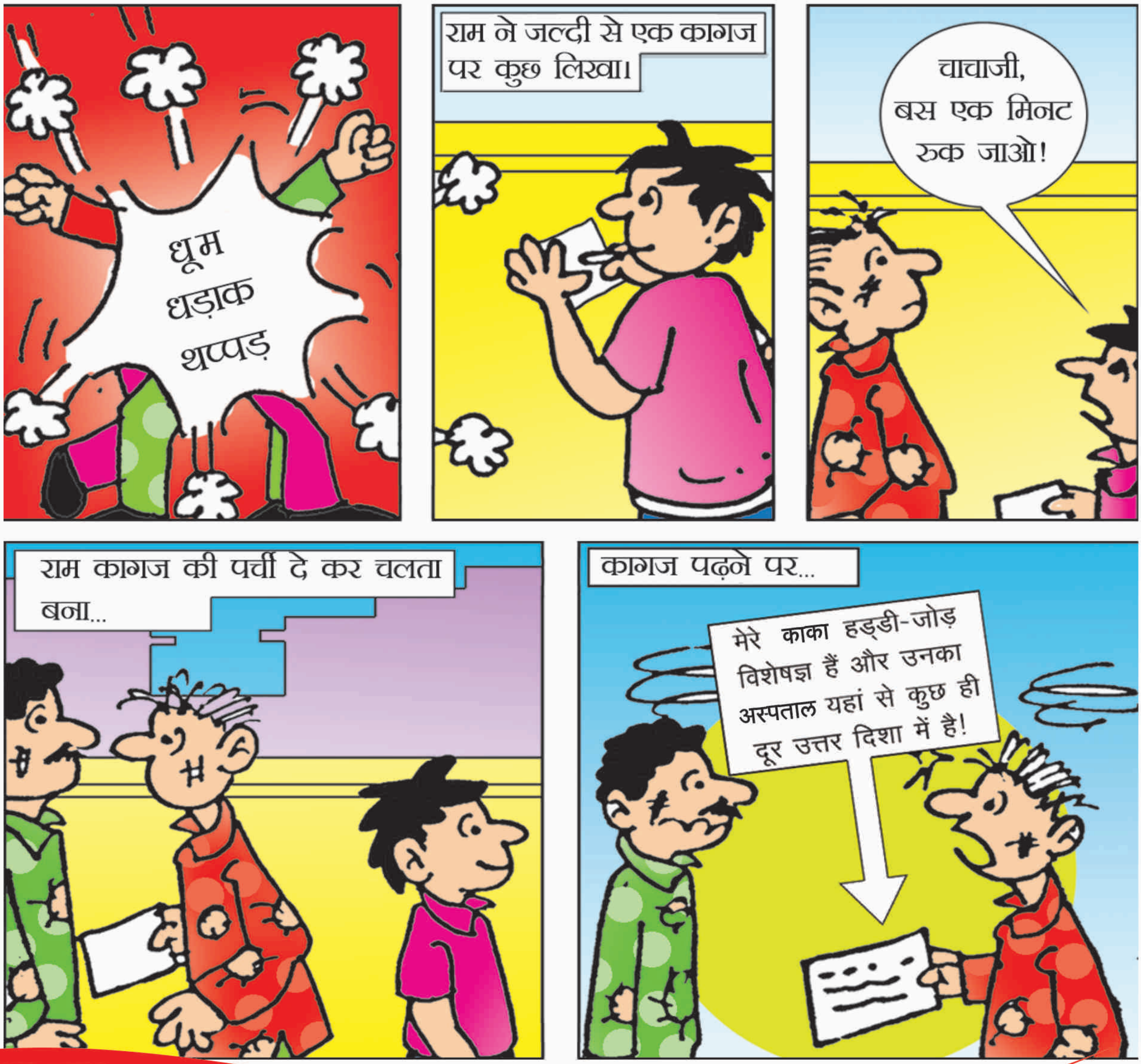

मधुमक्खी

– भानुप्रतापसिंह
– सिघांव,
(उ. प्र.)

मधुमक्खी है मित्र हमारी।
इसकी है संरचना न्यारी।।
पेड़, घरों में छत्ता रखती।
इसमें अण्डे, बच्चे करती।।
चुन-चुन फूलों का रस लाती।
गाढ़ा, मीठा शहद बनाती।।
खूब मजे से बच्चे खाते।
रोगों से छुटकारा पाते।।
पर सेवा परहित का भाव।
प्रेम बढ़े व मिटे दुराव।।
'शिक्षा' चुपके से दे जाती।
कीटों की श्रेणी में आती।।

छः अंगुल मुस्कान

गुड़िया– आज मुझे पता चला कि मेरी भी वेल्यू है।

बीना– कैसे पता चला?

गुड़िया– जब कस्टमर केयर वाली मैम ने कहा आपकी काल हमारे लिए महत्वपूर्ण है। तब अपनी वेल्यू का पता चला।

*****

मनु– यह शादी के जोड़े कहाँ बनते हैं?

कनु– भगवान के यहाँ।

मनु– ओह! तब तो गलती हो गई। मैं तो दर्जी को दे आया।

*****

चिम्पू– मैंने दरिया में डूबते एक आदमी को बाहर निकाल लिया। फिर दरिया में वापस फेंक दिया।

बॉबी– अरे ऐसा क्यों किया?

चिम्पू– कहावत है– 'नेकी कर दरिया में डाल।'

बबलू– सावन! बड़ा अच्छा फोन है। कहाँ से लिया?

सावन– रेस में जीता है।

बबलू– कितने लोग थे रेस में?

सावन– तीन! मैं, मोबाईल फोन का मालिक और पुलिस।

*****

बिट्टू पैराशूट बेच रहा था।

आरुषि– अगर पैराशूट हवा में न खुला तो?

बिट्टू– हम आपके पैसे वापस कर देंगे।

– मोहनलाल मगो, नई दिल्ली

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

हरिवंशराय बच्चन

श्री हरिवंशराय बच्चन को उनके परिवार में एक तरह का बागी समझा जाता था। विदेश जाने के पहले वे अपनी एक वृद्धा चाची से मिलने गए और विदेश जाने के लिए विदा माँगी। चाचीजी ने कुछ असंतोष के साथ कहा– ''तुमने तो कुल के युग–युग से चले आये सारे धर्मों को तोड़ा, अब क्या समुन्दर की यात्रा भी करोगे? इसकी तो मनाही है और सारे परिवार में तो कभी किसी ने ऐसा नहीं किया।'' बच्चन जी ने समझाते हुए कहा– ''मैं तो चाची! हवाई जहाज से जा रहा हूँ, समुद्र की तो एक बूँद भी मुझे नहीं छुएगी।''

एक बार राहुल सांकृत्यायन की पत्नी की कलाई घड़ी गुम हो गई। वे बहुत दुखी हुई। राहुल जी को पता लगा तो पूछ बैठे– ''घड़ी कितने की थी?''

''एक सौ अस्सी की।'' पत्नी ने बताया।

''खरीदते ही चीजें आधे मूल्य की रह जाती हैं। इसलिए आधा ही दु:ख मनाओ और लगभग इतना तो तुम मना ही चुकी होगी।'' मुस्कराते हुए राहुल जी ने कहा। उनका कहने का ढंग कुछ ऐसा था कि पत्नी हँसे बिना न रह सकी। –

राहुल सांकृत्यायन

चित्र बनाओ

– राजेश गुजर

बच्चों, बत्तख का चित्र आसानी से बनाओ– रंग भरो।

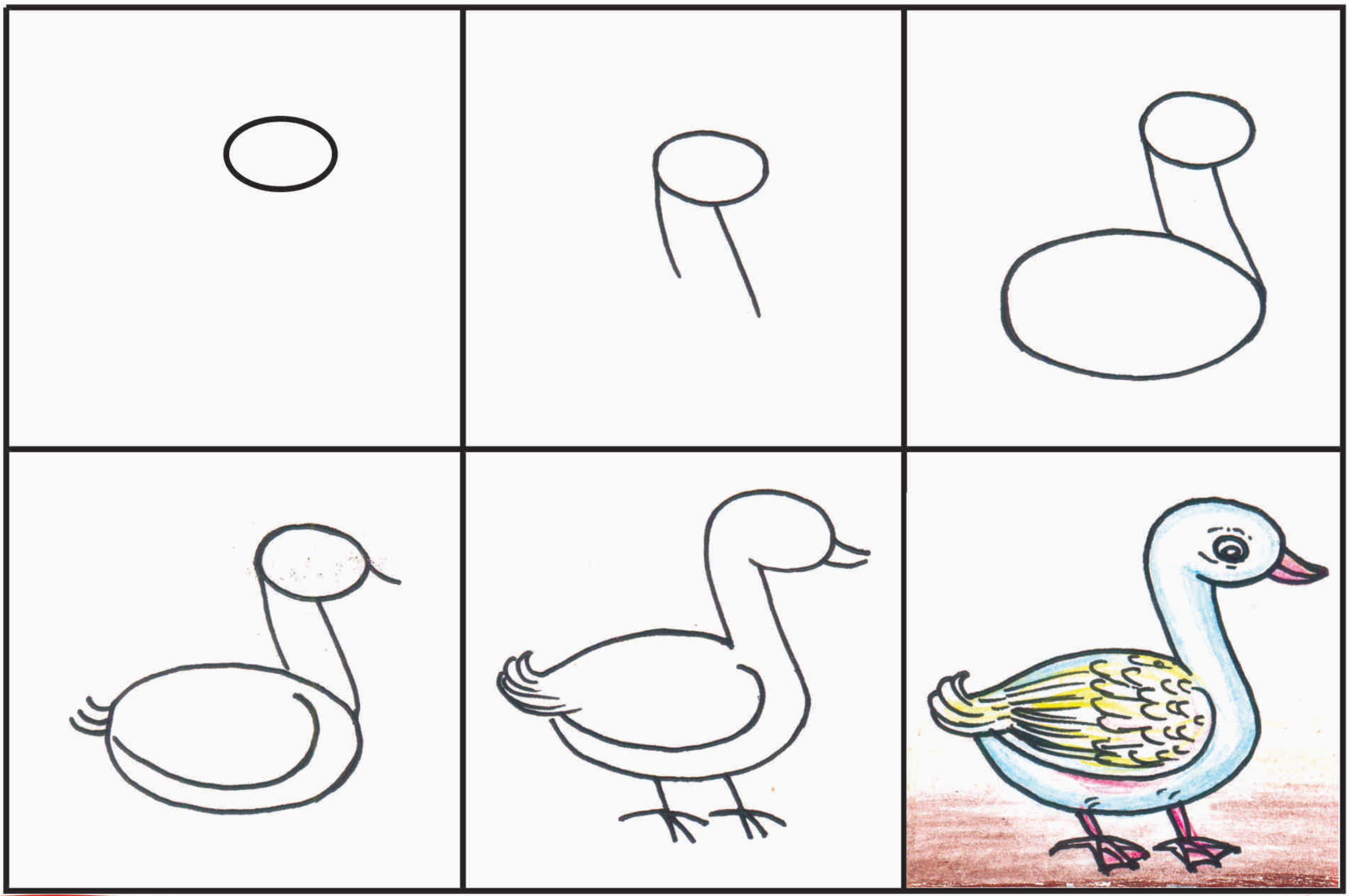

SURYA FOUNDATION

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063, Tel. : 011-25251588, 25253681
Email : suryainterview@gmail.com Website : www.suryafoundation.org

सूर्या फाउण्डेशन युवाओं के समग्र विकास तथा प्रशिक्षण के लिए अब एक जानी-मानी संस्था बन चुकी है। इसका प्रमुख उद्देश्य है देश के प्रति निष्ठा रखते हुए अनेक तरह के उत्तरदायित्व निभाने के लिए तेजस्वी, लगनशील तथा धुन के पक्के नवयुवकों का निर्माण करना।

इन्टरव्यू में चयन हो जाने के बाद सूर्या साधना स्थली कैंपस में छः माह की ट्रेनिंग दी जाएगी। उसके बाद एक साल के लिए On Job Training (OJT) रहेगी।
संघ के संस्कारों में पले-बढ़े, सामाजिक कार्यों में रुचि रखने वाले, शारीरिक रूप से सक्षम युवकों के सूर्या फाउण्डेशन में प्रवेश हेतु निम्न categories में इंटरव्यू होगा-

Post	Experience	6 months Initial Training + 1 year OJT	After Training CTC
CA	IPCC / MTER (2 Yrs Experience)	3 - 4 L Per Annum	As per Performance
	Fresher	4 - 5 L Per Annum	- do -
	Experienced (upto 5 years)	6 - 8 L Per Annum	- do -
	Experienced (above 5 years)	9 - 12 L Per Annum	-do -
Engineers, Fresher & Experienced	B.Tech (IIT)	7.5 - 9 L Per Annum	- do -
	B.Tech (NIT)	4.5 - 5 L Per Annum	- do -
	B.Tech (Other Institutes)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	M.Tech (IIT)	8.5 - 10 L Per Annum	- do -
	M.Tech (NIT)	5.5 - 7 L Per Annum	- do -
	M.Tech (Other Institutes)	3 - 3.6 L Per Annum	- do -
MBA	MBA (IIT + IIM)	15 L + Per Annum	- do -
	MBA (IIM)	12 - 15 L Per Annum	- do -
	MBA (Other Institutes)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
Post Graduate & Graduate	MCA, B.Ed., M.Ed., MSW, M.Sc., M.Com., M.A. *(Freshers / Experience) Ph.D. **	2 - 3 L Per Annum	- do -
	Mass Communication (Media)	2.4 - 3 L Per Annum	- do -
	B.Com. with three years experience in accounts, purchase, store	2.4 L Per Annum	- do -
	B.Sc. BCA, BBA, BA, B.Com (Persuing / Passed)	1.2 L Per Annum	- do -
	Diploma	1.8 L Per Annum	- do -
Law	LLB	2 L - 3 L Per Annum	- do -
	LLM	3 L - 3.6 L Per Annum	- do -

- उपरोक्त Categories में अधिक प्रतिभाशाली छात्रों को इससे भी अधिक वेतन दे सकते हैं।

*** Ph.D. candidates भी आवेदन कर सकते हैं। salary interview के दौरान तय होगी।**

2. **Graduate Management Trainee (GMT)**
योग्यता–2020 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा पास करने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 60% तथा गणित में 75% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। OJT / PCT के साथ-साथ ग्रेजुएशन और MBA या MCA करने की सुविधा दी जायेगी। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी, साथ ही 3000/- प्रतिमाह स्कॉलरशिप मिलेगा। On Job Training के दौरान आवास तथा पढ़ाई के साथ-साथ 11वीं में 6000/-, 12वीं में 7000/- Graduation Ist year में 9000/-, IInd Year में 10500/-, IIIrd Year में 12000/-, MBA/MCA Ist Year में 15000/-, MBA/MCA IInd Year में 20000/- Stipend प्रतिमाह मिलेगा। MBA/MCA पूरा होने के बाद 30000/- और Work Performance के आधार पर प्रतिमाह वेतन इससे अधिक भी हो सकता है।

3. **Assistant Staff Cadre (ASC)**
योग्यता– 2020 में 10वीं, 11वीं या 12वीं की परीक्षा देने वाले भैया आवेदन कर सकते हैं। पिछली कक्षा में न्यूनतम अंक 55% एवं गणित में 60% अंक प्राप्त किए हों। आयु : 18 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद OJT / PCT में भेजा जायेगा। प्रारंभिक 6 महीने की ट्रेनिंग के दौरान 3000/- प्रतिमाह Stipend मिलेगा तथा मुफ्त भोजन और रहने की व्यवस्था होगी। तीन वर्ष की OJT / PCT के दौरान Stipend - Ist year : 7,000/- प्रतिमाह व आवास, IInd year : 8,500/- प्रतिमाह व आवास, IIIrd year : 10,000/- प्रतिमाह व आवास। After training 13,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

4. **Under Graduate Management Trainee (UGMT)**
योग्यता–2020 में 12वीं कर चुके भैया आवेदन कर सकते हैं। 12वीं में न्यूनतम अंक 70% प्राप्त किए हों और जो ग्रेजुएशन कर रहे हैं। आयु : 19 वर्ष से कम। सूर्या ट्रेनिंग सेंटर में 6 माह की प्रारंभिक ट्रेनिंग के बाद On Job Training (OJT) or Practical Campus Training (PCT) में भेजा जायेगा। प्रारंभिक 6 महीनों की ट्रेनिंग के दौरान भोजन और आवास की सुविधा मुफ्त रहेगी। OJT / PCT के साथ-साथ Graduation के बाद MBA/PG in Mass Communication करने की सुविधा दी जायेगी। इस दौरान आवास तथा पढ़ाई के अलावा Graduation IInd year में 12,000/-, IIIrd Year में 14,000/- तथा Post Graduation Ist Year में 17,000/- तथा IInd Year में 20,000/- प्रतिमाह Stipend मिलेगा। Post Graduation पूरा करने के बाद 30,000/- (CTC) प्रतिमाह वेतन मिलेगा।

आवेदन हिंदी या अंग्रेजी में ही भरकर भेजें। विस्तृत बॉयोडाटा के साथ-साथ यदि आपने NCC / NSS / OTC / ITC / शीत शिविर / PDC आदि कोई शिविर किया है तो उल्लेख करें। सेवा भारती / विद्या भारती / वनवासी कल्याण आश्रम के किसी विद्यालय / छात्रावास या संघ या परिषद अथवा विविध क्षेत्रों से संबंध रहा है तो कब और कैसे। सूर्या परिवार में कोई परिचित हों तो उनका नाम, विभाग भी जरूर लिखें। पढ़ाई का विवरण लिखते हुए, Mark sheet की फोटोकॉपी साथ जोड़ें।
कृपया विस्तारपूर्वक बायोडाटा के साथ निम्नलिखित पते पर अपना CV / आवेदन भेजें। CV / आवेदन Email से भी भेज सकते हैं।

B-3/330, Paschim Vihar, New Delhi - 110063 | Email : suryainterview@gmail.com

आवेदन विज्ञापन छपने के एक माह के भीतर करें

दिल में
हिंदुस्तान
देश को करें रोशन
मेक इन इंडिया
के साथ
SURYA
MADE IN INDIA
LIGHTING | APPLIANCES
FANS | STEEL & PVC PIPES
आत्मनिर्भर भारत की पहचान
SURYA ROSHNI LIMITED
E-mail: consumercare@surya.in | www.surya.co.in | suryalighting surya_roshni
Tel: +91-11-47108000, 25810093-96 | Toll Free No.: 1800 102 5657

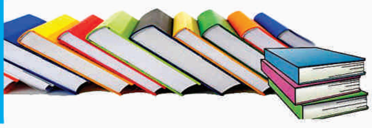

पुस्तक परिचय

सुगंध लुटाते फूल

मूल्य ५०/-
प्रकाशक- नमन प्रकाशन
लखनऊ- (उ. प्र.)

संत कुमार वाजपेयी 'संत' जी द्वारा रचित विविध विषयों पर लिखी २७ बाल कविताओं का सम्पूर्ण बहुरंगी बाल कविता संग्रह। यह एक सरस एवं सुबोध कविताओं का गुलदस्ता है।

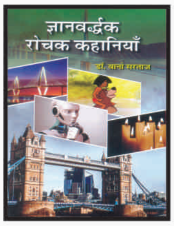

ज्ञानवर्द्धक रोचक कहानियाँ

मूल्य २००/-
प्रकाशक- साहित्यागार
धमाणी मार्केट की गली,
चौड़ा रास्ता, जयपुर- (राज.)

डॉ. बानो सरताज हिन्दी बाल साहित्य की कुशल रचनाकार हैं। सामान्य कहानियों से अलग विशेष विषयों पर ज्ञान बढ़ाने वाली सुरुचिपूर्ण उनकी पाँच कहानियाँ इस संकलन में हैं।

कोरोना दोहा संग्रह

मूल्य १५०/-
प्रकाशक- पाथेय प्रकाशन,
११२, सराफा वार्ड,
जबलपुर- (म. प्र.)

प्रसिद्ध बाल साहित्यकार अश्वनी कुमार पाठक द्वारा कोरोना विषय का विशेष एवं विस्तृत समावेश कर लिखे गए २०० दोहों का संग्रह।

स्वच्छ रहे परिवेश हमारा

मूल्य १००/-
प्रकाशक- अविचल प्रकाशन,
'सावित्री' १५-वृन्दा विहार, निकट अमृत
आश्रम, ऊँचापुल, हल्द्वानी (उत्तराखण्ड)

डॉ. आर. पी. सारस्वत द्वारा रचित इस बाल कविता संग्रह में २४ संदेश परक स्वच्छता का महत्व रेखांकित करती एवं अन्य रोचक बाल कविताएँ हैं।

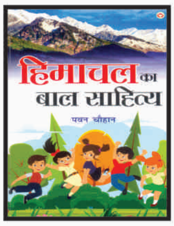

हिमाचल का बाल साहित्य

मूल्य २५०/-
प्रकाशक- डायमंड पॉकेट बुक्स प्रा. लि.
X-३०, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया,
फैज-II, नई दिल्ली- ११००२०

वरिष्ठ बाल साहित्यकार पवन शर्मा ने इस पुस्तक में पर्याप्त शोध एवं परिश्रम पूर्वक हिमाचल क्षेत्र के ४२ ऐसे बाल साहित्यकारों का परिचय एवं उनकी प्रतिनिधि रचनाएँ संजोई हैं जिनसे शेष भारत के पाठक प्राय: अल्प परिचित हैं। बाल साहित्य शोध एवं अध्ययनकर्ताओं के लिए यह एक महत्वपूर्ण कृति है।

कविता

सौर मण्डल

– विजय कुमार पटैय्या

सौर परिवार में कितने ग्रह ?
सौर परिवार में नौ हैं ग्रह।
'सूर्य' इन सबका नेता है,
घर का जो मुखिया होता है।
'बुध' ग्रह पहले है आता,
सबसे छोटा ग्रह कहलाता।
'शुक्र' का है दूसरा स्थान,
घड़ी की दिशा में चलायमान।
'पृथ्वी' जिस पर हम रहते,
नीला ग्रह इसको कहते।
'मंगल' ग्रह चौथे नंबर पर,
लाल-चमकता है अंबर पर।
'बृहस्पति' जो गुरु कहलाता,
पाँचवा स्थान परिवार में पाता।
'शनि' सुनहरा रंग भरा है,
वलय लिया छटवाँ धरा है।
'अरुण' सातवाँ ग्रह कहलाता,
हर दम सूर्य का चक्कर लगाता।
'वरुण' देवता है जला का,
आठवाँ ग्रहर सौर मण्डल का।
'यम' नवमा प्लूटो भी कहाता,
अपने पथ में घूमा करता।
सब मिल सौर-परिवार बनाते,
आपस में हिल-मिलकर रहते।

– जामझिरी (म. प्र.)

* प्लूटो पहले सौर मण्डल का सबसे बाहरी ग्रह, पर अब एक खगोलीय वस्तु माना जाता है।

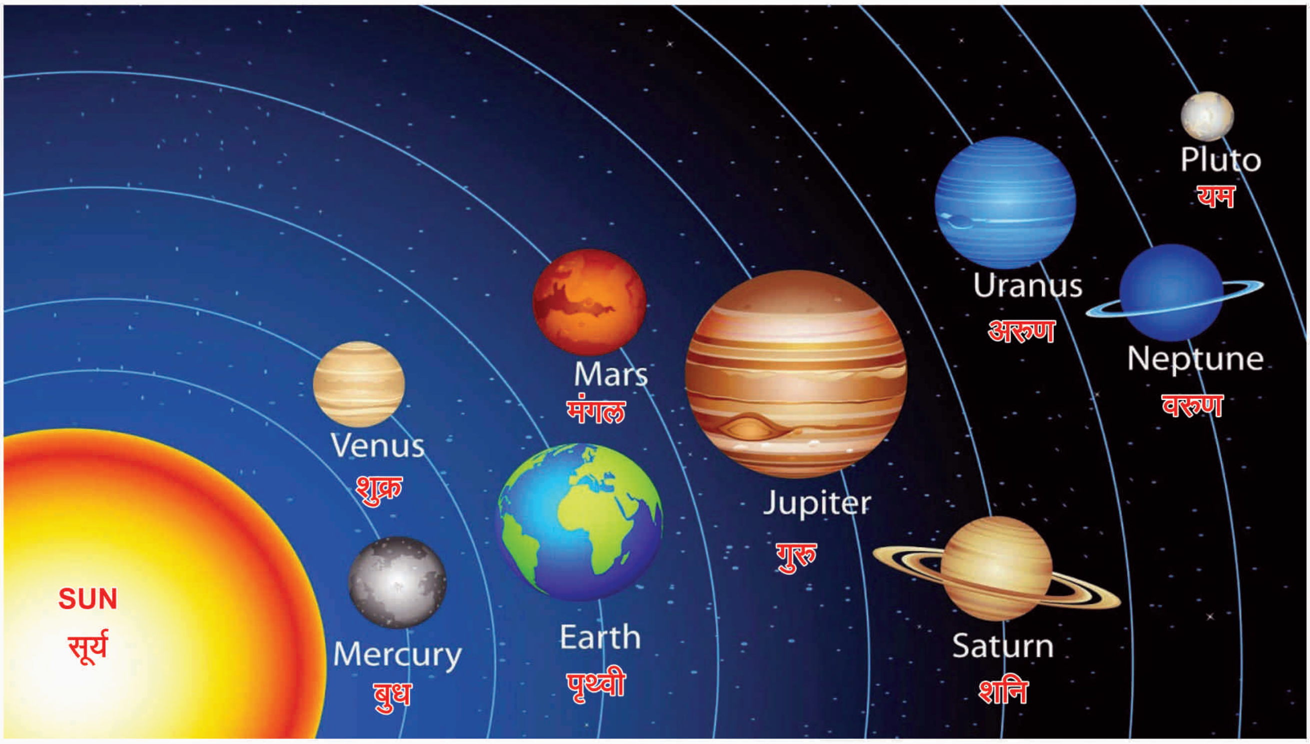

सर्दी

– बलदाऊ राम साहू

घर से निकलो सूरज भाई
सर्दी आई, सर्दी आई।

ठिठुर रहा है यह जग सारा
कितना नीचे गिर गया पारा
काँप रही है धरती थर-थर
अब बादल से करो लड़ाई।

घर से निकलो सूरज भाई
सर्दी आई, सर्दी आई।

किरणें क्यों बैठी सकुचाए
चलो मिलकर उन्हें बुलाएँ
कब तक ऐसे रहेंगे बैठे
दे आएँ हम उसे रजाई।

घर से निकलो सूरज भाई
सर्दी आई, सर्दी आई।

जाड़े से हम नहीं डरेंगे
डटकर उससे सदा लड़ेंगे
उसने काम बहुत बिगाड़ा
ले लो तुम अब नई रजाई।

घर से निकलो सूरज भाई
सर्दी आई, सर्दी आई।

– दुर्ग (छत्तीसगढ़)

गैस के गुब्बारे

– कुसुम अग्रवाल

अरे! गैस के भरे गुब्बारे,
हल्के–फुल्के बड़े गुब्बारे।
बस धागे पर खड़े गुब्बारे,
छूट गए तो उड़े गुब्बारे।।

कोई सेब सा कोई भालू,
गोल–गोल कुछ जैसे आलू।
मन करता है इन्हें सजालूँ,
और हवा में कभी उड़ालूँ।।

रंग–बिरंगे ये मतवाले,
लाल–हरे–नीले और काले।
बच्चों का मन हरने वाले,
उनके साथी देखे भाले।।

सुनो गुब्बारे वाले भैया,
ले लो चाहे और रुपैया।
गैस कभी सस्ती ना भरना,
वरना लौटा देगी मैया।।

– राजसमंद (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०२१-२०२३ | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

प्रकाशन तिथि २०/०१/२०२१ | प्रेषण तिथि ३०/०१/२०२१ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क
180/-

आजीवन शुल्क
1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब **Jio Net** पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना